



अधिकतम 33.4 डिग्री
न्यूनतम 26.5 डिग्री

हरिभूमि सोनीपत भूमि

रोहतक, रविवार, 20 जुलाई 2025

11
रुयिया की कमी
से परेशान
किसानों ने दी
आंदोलन की
चेतावनी



12
मुक्केबाजी
चैंपियनशिप:
देव के मुक्के
पड़े सब पर
पड़े भारी



डीसी ऑफिस भेजे 5 एंबुलेंस ड्राइवर

हरिभूमि न्यूज ▶ सोनीपत

जिले ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत एंबुलेंसों पर तैनात पांच चालकों को जिला उपायुक्त कार्यालय में भेजा गया है। जिला स्वास्थ्य विभाग की तरफ से इस संबंध में चालकों को रिलीव कर दिया गया है। चालकों को आगामी ड्यूटी जिला उपायुक्त कार्यालय में देनी होगी। जानकारी मिली है कि एंबुलेंस बेड़े में गाड़ियां कड़म हालत में पहुंच चुकी हैं। बेड़े से ऑफ लाइन चल रही गाड़ियों पर तैनात चालकों को उपायुक्त कार्यालय में गाड़ियां चलाने के लिए भेजा गया है।

बता दें कि जिला स्वास्थ्य विभाग के पास मौजूदा समय में कुल 30 एंबुलेंस गाड़ियां लोगों की सुविधा के लिए उपलब्ध हैं। जिनमें से तीन गाड़ी तकनीकी खराबी के चलते सर्विस सेंटर पर ठीक होने के लिए गई हैं। वहीं

कंडम हो चुकी एंबुलेंस पर लगी हुई थी चालकों की ड्यूटी



तीन गाड़ी मोबाइल मेडिकल यूनिट की है। बेड़े में फिलहाल 24 गाड़ियां चालू हालत में हैं। वहीं विभाग में एनएचएम के तहत 46 चालक व कौशल रोजगार हरियाणा में 36 चालक जिले में तैनात हैं। गाड़ी कम होने के चलते चालकों को एक दूसरी एंबुलेंस पर ड्यूटी अरजेंट करनी पड़ रही थी। इस संबंध में जिला उपायुक्त

चालकों को करवाया अवगत

प्रशासनिक आदेशों की पालना करनी होती है। पांच चालकों को उपायुक्त कार्यालय में भेजे जाने के निर्देश मिले हैं। इस संबंध में चालकों को अवगत करवाया दिया गया है। प्रशासनिक आदेशों की पालना की जा रही है। आगामी आदेशों तक चालक उपायुक्त कार्यालय में अपनी ठेकाएं देंगे। जोकि एनएचएम के तहत जिले में तैनात हैं।

-अ. नजीत राठी, नोडल अधिकारी।

कार्यालय की तरफ से चालकों की जानकारी मांगी गई थी। जिनमें से पांच चालकों को उपायुक्त कार्यालय में ड्यूटी करने के निर्देश मिले हैं। जिनमें चालक नरेश, विकास, जयपाल, प्रवीण, राकेश शामिल हैं।

रोहत गांव के पास मानव कंकाल मिलने से मचा हड़कंप

हरिभूमि न्यूज ▶ सोनीपत

सदर थाना क्षेत्र के गांव रोहत के पास संदिग्ध हालत में मानव कंकाल मिलने से हड़कंप मच गया। राहगीरों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंची जल्दी नमूने एकत्रित कर शव को नागरिक अस्पताल में भिजवाया। जहां फोरेंसिक चिकित्सक न होने के चलते शव को महिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल खानपुर भेज दिया गया। जानकारी के अनुसार रोहत गांव के पास मानव कंकाल मिलने की सूचना मिली थी। सूचना के बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची। जहां एक शव कंकाल रूप में गली सड़ी हालत में बरामद हुआ। शव कंकाल के रूप में बदल चुका है। वह महिला का है, या पुरुष का है। इसकी जानकारी नहीं मिल रही है। शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल में भिजवाया। जहां शव को खानपुर भेज दिया गया। पोस्टमार्टम करवाने के बाद शव पुरुष का है या महिला का है उसके बाद आगामी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी। आसपास के क्षेत्र में पुलिस ग्रुप में अलग-अलग स्थानों से मिसिंग हुए लोगों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। ताकि मुक्त की पहचान जल्द से जल्द हो सके।

नाथपुर में करंट से युवक की मौत

सोनीपत। कुंडली थाना क्षेत्र के गांव नाथपुर में शराब ठेके के पास साइन बोर्ड लगते हुए करंट लगने से युवक झुलस गया। वहां मौजूद लोग युवक को लेकर निजी अस्पताल में पहुंचे। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मामले की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल में भिजवाया। जहां शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया। गांव कुंडली निवासी बाबल कुमार अनुसार कुंडली निवासी कृष् कुमार (18) घंटे का काम करता था। वह नाथपुर गांव में ठेके के पास साइन बोर्ड लगा रहा था। उसी दौरान वह करंट लगने से झुलस गया। मौके पर मौजूद लोग उसे लेकर निजी अस्पताल में पहुंचे। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मामले की सूचना मिलते ही मौके पर कुंडली थाना पुलिस पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया।

खबर संक्षेप

संदिग्ध हालत में 14 वर्षीय किशोरी लापता

सोनीपत। कुंडली थाना क्षेत्र से संदिग्ध हालत में किशोरी के लापता होने के आरोप का मामला सामने आया है। किशोरी के परिजनों ने मामले को लेकर पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने इस संबंध में मुकदमा दर्ज कर लिया है। जानकारी के अनुसार थाने में शिकायत मिली कि एक 14 वर्षीय लड़की संदिग्ध हालत में लापता हो गई। परिजनों ने अपने स्तर पर उसकी तलाश की, लेकिन कोई सुराख हाथ नहीं लग पाया। कुंडली के थाना प्रभारी सेठी ने बताया कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। जल्द से जल्द किशोरी का पता लगाकर इस मामले में आगामी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

शहर के कोट मोहल्ला से युवती लापता

सोनीपत। सिविल लाइन थाना क्षेत्र के कोट मोहल्ला से संदिग्ध परिस्थितियों में 19 वर्षीय युवती लापता होने का मामला सामने आया है। घटना का पता चलने के बाद परिजनों ने मामले को लेकर पुलिस को शिकायत देकर बताया कि उनकी बेटी संदिग्ध हालत में लापता हो गई। अपने रिश्तेदारी व आसपास के क्षेत्र में उसकी तलाश की, लेकिन कोई सुराख हाथ नहीं लग पाया। मामले को लेकर पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने इस संबंध में मुकदमा दर्ज कर युवती की तलाश शुरू कर दी है।

गांव अहमदपुर में संदिग्ध परिस्थितियों में फंटे से लटका मिला विवाहिता का शव

पूजा ने छह माह पूर्व साहिल से की थी लव मैरिज, महिला की थी दूसरी शादी

दिल्ली के बदरपुर में हुई थी पहली शादी, नाना के पास रह रहे पहले पति के तीन साल के बेटे को साथ रखना चाहती थी पूजा, शुक्रवार देर शाम अपने कमरे में फंटे पर लटकता मिला था शव

हरिभूमि न्यूज ▶ सोनीपत

सेक्टर-27 शहर थाना क्षेत्र के गांव अहमदपुर में संदिग्ध हालत में विवाहिता ने फंटे से लटककर अपनी जीवन समाप्त कर ली। पुलिस ने मौके से जल्दी नमूने एकत्रित कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

शांति विहार निवासी बिल्लू ने बताया कि उसकी बेटी पूजा (24) ने करीब छह माह पहले अहमदपुर निवासी साहिल के साथ प्रेम-



सोनीपत। अस्पताल में पोस्टमार्टम के दौरान पुलिस के साथ मौजूद परिजन।

बिसरा जांच रिपोर्ट से होगा खुलासा

जांच अधिकारी एसआइ कुलदीप ने बताया कि परिजनों के बयान पर बीएनएस की धारा-194 के तहत कार्यवाही अमल में लाई गई है। बिसरा सैपल लिए गए हैं। जिन्हें जांच के लिए भेजा जायेगा। पूजा की साहिल के साथ दूसरी शादी थी। उसकी पहली शादी दिल्ली के बदरपुर के पास हुई थी। उसके पास तीन साल का बेटा भी है। जो पूजा के पिता के पास रहता था। जानकारी मिली है कि पूजा अपने बेटे को पास में रखना चाहती थी। मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। बिसरा रिपोर्ट में मौत के सही कारणों का पता चल जायेगा।

विवाह किया था। शुक्रवार देर शाम को उन्हें सूचना मिली के पूजा ने अपने कमरे में फंटे से लटककर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। मामले को लेकर पुलिस को अवगत करवाया। सूचना के बाद एफएसएल व पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। जहां घटना स्थल से जल्दी नमूने एकत्रित कर शव को कब्जे में लेकर अस्पताल पहुंचाया।

किशोरी से दुष्कर्म के आरोपित को अदालत ने सुनाई 20 साल की कैद, 55 हजार जुर्माना

सोनीपत। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश नरेंद्र ने किशोरी को बहककर ले जाने के बाद दुष्कर्म करने के आरोपित को दोषी करार दिया है। अदालत ने दोषी को 20 साल कैद व 55 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। जुर्माना राशि में से 45 हजार रुपये पॉइंटा को देने के आदेश दिए गए हैं। दुष्कर्म किए जाने से किशोरी गर्भवती हो गई थी।

बड़ी औद्योगिक थाना क्षेत्र के गांव की रहने वाली महिला ने 12 जनवरी, 2023 को बताया था कि उनकी 16 वर्षीय बेटी फैक्ट्री में नौकरी करती थी। उसके साथ यूपी के बंदूक का रहने वाला नवीन भी नौकरी करता था। 20 दिसंबर 2022 को नवीन उसकी बेटी को बहककर ले गया। तलाश करने पर भी उसकी जानकारी नहीं मिली। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी। पुलिस ने 3 मार्च, 2023 को पॉइंटा को बरामद कर लिया था। पुलिस ने उसका मेडिकल कराया तो तीन माह से अधिक की गर्भवती होने का पता लगा था। पुलिस ने मामले में दुष्कर्म समेत अन्य धारा जोड़ दी थी। मामले में कार्रवाई करते हुए

■ 45 हजार रुपये फैक्ट्री में काम करने वाली किशोरी को भी देने हैं, 2022 की घटना।

30 अप्रैल, 2024 को आरोपित नवीन को गिरफ्तार किया गया था। आरोपित ने बताया था कि वह सहकर्मी को बहककर ले गया था। उसे अपने कमरे पर छिपाकर रखा और उसके साथ दुष्कर्म किया था। वह उसे पहले बंदूक और बाद में अलीगढ़ ले गया। वहां भुंटे पर रखकर उसके साथ दुष्कर्म किया था। वहां पर लडकी अपने परिजनों से बातचीत करने लगी थी। जिस पर वह उसे छोड़कर भाग गया था। मामले में पुलिस ने बाद में आरोपी के भाई व पिता को भी काबू किया था। मामले की सुनवाई करते हुए एएसजे नरेंद्र ने नवीन को दोषी करार दिया है। अदालत ने नवीन को पांच साल कैद व 20 हजार रुपये पॉइंटा के बरामद कर दिया था। पुलिस ने उसका मेडिकल कराया तो तीन माह से अधिक की गर्भवती होने का पता लगा था। पुलिस ने मामले में दुष्कर्म समेत अन्य धारा जोड़ दी थी। मामले में कार्रवाई करते हुए

नया ने चलाया अतिक्रमण हटाओ अभियान

गन्नीर। शहर की सड़कों को अतिक्रमण मुक्त और जाम से राहत दिलाने के लिए शनिवार को नया ने अभियान चलाया। जिसमें दुकानों के बाहर सड़कों पर रखा सामान को ज्वर कर सील कर दिया। नया सचिव प्रदीप खर्ब ने बताया कि सड़कों पर जाम लगने की शिकायतें लगातार मिल रही थीं। कई बार दुकानदारों को चेतावनी देने और अपील करने के बावजूद, उन्होंने सड़क पर सामान रखना बंद नहीं किया। स्थिति को देखते हुए प्रशासन को सख्त कदम उठाना पड़ा। इस दौरान दुकानों के बाहर रखे फ्लेक्स बोर्ड, केले, सेब, जूस की रेहड़ियां रज्जई सहित कई सामान ज्वर किया। कार्रवाई से दुकानदारों में हड़कंप मच गया और वे तुरंत अपना सामान समेटने में जुट गए। नया सचिव ने कहा कि भविष्य में भी अगर कोई दुकानदार सड़क पर सामान रखेगा तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह अभियान शहर को जाम मुक्त और व्यवस्थित बनाने के लिए लगातार चलाया जाएगा।

पंचायत ने सैदपुर स्कूल में रोपा ऑक्सीजन बाग

हरिभूमि न्यूज ▶ खरखौदा

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैदपुर में 1008 पौधों का ऑक्सीजन-बाग लगाया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता विधायक पवन खरखौदा ने की। इस ऑक्सीजन - बाग की रूपरेखा ट्रीमैन देवेन्द्र सूरा ने तैयार की। शनिवार का समारोह सैदपुर ग्राम प्रधान प्रमोद व ग्राम सचिव जलजित के सहयोग से आयोजित किया गया। विद्यालय प्रांगण में



आयोजित समारोह में सभी गणमान्यों, शिक्षकों और छात्रों ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत अपना पूर्ण सहयोग व समर्थन देने का आश्वासन दिया। मंच

उन्होंने ज़ीवणी के धार्मिक व पर्यावरणीय महत्व के बारे में भी बताया। प्रवक्ता बलवान, रविन्द्र, रमेश, सुमन, मनीषा ज्योति ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष नरेश पाराशर, पालिका उप चयरमैन मुकेश सैनी, जयकरण ठेकेदार, गोशाला प्रधान जयप्रकाश, सुरेश दरोगा, वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारियों तथा ग्रामीणों की गरिमामय उपस्थिति रही।

गढ़ी से इंदगाह रोड के नालों की सफाई में खानापूर्ति

बरसाती मौसम में जलभराव का डर

■ सफाई के दारों की पोल खोलती नालों के स्लैब के पास उगी घास।

हरिभूमि न्यूज ▶ गन्नीर

बरसात का मौसम शुरू होते ही नालों की सफाई का काम जन स्वास्थ्य विभाग द्वारा करवाया जा रहा है, लेकिन इस कार्य में अनियमितताओं और खानापूर्ति के आरोप सामने आ रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि विभाग द्वारा नालों की सफाई आधी-अधूरी की जा रही है, जिससे बरसात में जलभराव की गंभीर समस्या पैदा हो सकती है।

राजकीय माडल संस्कृति स्कूल के पास रहने वाले लोगों ने बताया कि सफाई कर्मी गढ़ी केसरी से इंदगाह रोड तक कई स्थानों पर नालों की सफाई के लिए स्लैब भी नहीं हटाए गए और नालों के अंदर



गन्नीर। माडल संस्कृति स्कूल के पास सफाई के दारों की पोल खोलती नालों के स्लैब के पास उगी घास।

जमा गाद और कचरे को नहीं निकाला जा रहा। इससे बारिश के पानी की निकासी में रुकावट आएगी और स्कूल के आसपास पानी भरने की समस्या उत्पन्न होगी।

खर्च होंगे आठ लाख

नालों की सफाई का यह कार्य करीब

8 लाख रुपये की लागत से किया जा रहा है। बावजूद इसके काम की गुणवत्ता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। स्थानीय निवासियों ने बताया कि हर साल इसी तरह खानापूर्ति कर दी जाती है और बारिश आते ही गलियां और सड़कें पानी से भर जाती हैं।

जांच की मांग

लोगों ने जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से मांग की है कि वे सफाई कार्य की निगरानी खुद करें और ठेकेदारों को पूरी तरह नालों की गहराई तक सफाई करने के निर्देश दें। यदि समय रहते यह काम सही ढंग से नहीं हुआ तो क्षेत्र के लोगों को बरसात में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।



100 का स्वास्थ्य जांच 50 ने किया रवतदान

सोनीपत। रोटी क्लब मिडटाउन द्वारा रोटी सेंटर, एटलस रोड में एक मंगा हेल्थ चेकअप कैंप, रक्तदान शिविर एवं महिलाओं के लिए विशेष मैमोग्राफी कैंप का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। मेयर राजीव जैन ने भी शिविर में भाग लिया। उन्होंने क्लब के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए सभी सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की। शिविर में 100 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण, 50 लोगों ने रक्तदान, 30 से अधिक महिलाओं ने मैमोग्राफी जांच में भाग लिया। सीए भूपेश खन्ना ने स्वयं रक्तदान कर प्रेरणा का संदेश दिया। क्लब सचिव रोटेरियन कर्ण खुराना, कार्यक्रम संयोजक रोटेरियन अविनाश भगत, एडवोकेट एससी पारुथी, सनी जैन, ओपी बत्रा, राजीव तनेजा, कमल वर्मा तथा क्लब की सक्रिय महिला सदस्यों ने पूरे आयोजन में अहम भूमिका निभाई।

D C JAIN NURSING & SARITA JAIN COLLEGE GROUP OF INSTITUTIONS

12वीं. आर्ट्स के विद्यार्थी भी यह कोर्स कर सकते हैं।

GNM ANM (M/F)

DMLT DOTT DRT BPT

BMLT BOTT BRT MPT

Post Basic Nursing B.SC Nursing

D. Pharmacy D.EL.Ed B.Ed

For more guidance **8529212507**

आपका अपना जनता हस्पताल गुड़ मंडी, सोनीपत आपकी सेवा में उपलब्ध

KIRORIMAL COLLEGE OF EDUCATION

ADMISSION OPEN

9 BAGHPAT ROAD, KHEWRA, SONIPAT

90569 50003, 90507 50002

South Point GROUP OF INSTITUTIONS, SONIPAT

Run by Mange Ram Educational and Charitable Trust (Regd.)

98120 20033, 98124 21919, 90344 72910

Direct Admission

- B.Tech / LEET (CSE, ECE, Mechanical, Civil)
- M.Tech (CSE, ECE) • M.Tech Part Time (ECE / CSE)
- Diploma / LEET (CSE, ECE, Electrical, Mechanical, Civil, MLT)
- BBA, BCA, MBA, MCA
- B.A. LL.B (Hons.), LL.B. (Hons.), LLM (Hons.)
- B.A., B.Sc. (Medical/ Non-Medical), B.Com, M.Com, PGD (Yoga)
- M.Sc. (Physics, Chemistry, Maths)
- M.A. (English, Hindi, History, Pol. Science)
- B.Ed., M.Ed., JBT / D.Ed., B.P.Ed.
- D.Pharm, B.Pharm, B. Pharm / Leet
- B.Sc. (Nursing)
- CBSE Affiliated, Sr. Sec. Schools

DILBAG S. KHATRI Chairman

98120 20033

एक पेड़ की तरह है निवेश, अभी लगाएंगे तो भविष्य में देगा छाया

● निवेश की यात्रा शुरू कर रहे हैं तो जान लें कुछ जरूरी नियम ● सबसे पहले निवेश के लिए लक्ष्य लेकर चलें और रुकें नहीं ● हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं

निवेश मंत्रा

विनोद कोशिक



निवेश एक पेड़ की तरह है। यदि आप इस समय निवेश रूपी पौधा रोपेंगे तो यह बुढ़ापे में आपको छाया देगा और भविष्य को सुरक्षित रखेगा। अगर आप भी अपनी निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं या कर चुके हैं तो कुछ नियमों को अपने जीवन में उतार लें। इससे आप आसानी से अपने सपने को पूरा कर सकेंगे। अपने गोल पूरे कर सकेंगे। सबसे इन्वेस्टमेंट यानी निवेश शब्द तो बहुत बार सुना होगा। चाहे परिवार की बातचीत, समाचार अपडेट या रोजमर्रा के जीवन में भी, लेकिन क्या आप कभी यह सोचने से रोके हैं कि इसका क्या मतलब है? सबसे सरल अर्थ में, इन्वेस्टमेंट आज पैसे, समय या ऊर्जा देने के बारे में है, आशा है कि यह भविष्य में कुछ और बढ़ेगा। कल्पना करें कि यह एक पौधा रोपने की तरह है, आप कोशिश करते हैं, इसे सावधानी से पोषण करते हैं, यह जानकर कि किसी दिन यह आपको छाया, फल या शायद कुछ सुंदरता भी प्रदान करेगा। यही इन्वेस्टमेंट यानी निवेश का मंत्र है। हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं।

आखिर क्या है निवेश

निवेश एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने पैसे को विभिन्न प्रकार की संपत्तियों या वित्तीय साधनों में लगाते हैं, जिससे उन्हें भविष्य में आय या लाभ प्राप्त हो सके। निवेश का उद्देश्य आमतौर पर अपने पैसे को बढ़ाना, आय अर्जित करना, या भविष्य के लिए बचत करना होता है। निवेश एक एसेट और/या एक आइटम है जो या तो अप्रिंशिएशन प्राप्त करने या इनकम जनरेट करने के लिए अर्जित किया जाता है। इन्वेस्टमेंट में वृद्धि एक निश्चित अवधि में एसेट/आइटम के मूल्य में वृद्धि है। इससे स्टॉक खरीदना, रियल एस्टेट में इन्वेस्ट करना, गोल्ड खरीदना, या साइड बिजनेस शुरू करना भी हो सकता है। प्रत्येक विकल्प में वृद्धि की क्षमता होती है, विशेष रूप से अगर अच्छी तरह से मैनेज किया जाता है और हां, इसमें कुछ जोखिम शामिल हैं- वहां कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन ये इन्वेस्टमेंट वेल्थ-बिल्डिंग के अक्सर प्रदान कर सकते हैं।

निवेश के प्रकार

- वित्तीय निवेश : इसमें शेयर, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, और अन्य वित्तीय साधन शामिल हैं।
- वास्तविक निवेश : इसमें अचल संपत्ति, सोना, और अन्य भौतिक संपत्तियां शामिल हैं।
- व्यवसायिक निवेश : इसमें व्यवसाय शुरू करने या व्यवसाय में हिस्सेदारी खरीदने के लिए निवेश करना शामिल है।

निवेश के लाभ

- आय अर्जित करना : निवेश से आय अर्जित करने का अवसर मिलता है।
- पैसे का बढ़ना : निवेश से पैसे का मूल्य बढ़ सकता है।
- भविष्य के लिए बचत : निवेश से भविष्य के लिए बचत करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरण : निवेश से पोर्टफोलियो का विविधीकरण होता है, जिससे जोखिम कम होता है।
- कैपिटल प्रिजर्वेशन : जब आप इन्वेस्ट करते

निवेश का महत्व

- इन्वेस्टमेंट आपके पैसे को महंगाई से बचा सकता है।
- आपको आय अर्जित करने में मदद कर सकता है।
- आपको अपने लॉन्ग-टर्म लक्ष्यों के करीब ला सकता है।
- समय के साथ अपनी कैश वैल्यू खोने के बजाय, इन्वेस्टमेंट आपको रियल वेल्थ बनाने में मदद कर सकता है
- कंपाउंडिंग होती है-जहां आपका रिटर्न गुणा होता है और समय के साथ अजाना रिटर्न जनरेट करना शुरू करता है।
- इसलिए, चाहे रिटायरमेंट के लिए बचत हो या उस ड्रीम वेकेशन, इन्वेस्टमेंट आपके सभी वर्तमान और भविष्य के लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर सकता है।

हैं, तो आप अपने पैसे को सुरक्षित रखते हैं और समय के साथ वैल्यू को खोने से रोकते हैं।

निवेश के जोखिम

- बाजार का जोखिम : बाजार की स्थितियों में बदलाव से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
- क्रेडिट जोखिम : उधारकर्ता के डिफॉल्ट करने से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
- लिक्विडिटी जोखिम : निवेश को आसानी से बेचने में समस्या हो सकती है।
- जोखिम : मुद्रास्फीति से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।

ऐसे करें निवेश

- लक्ष्यों को परिभाषित करें : सोचें कि आप अपने इन्वेस्टमेंट को प्राप्त करने के लिए क्या चाहते हैं।
- अपने जोखिम का आकलन करें : सोचें कि आप नौद को खोए बिना कितना जोखिम ले

निवेश से पहले यह जान लें जोखिम सहिष्णुता: आप अपने इन्वेस्टमेंट के कुछ या सभी को खोने के विचार से कितना आरामदायक हैं?

समय सीमा: क्या आप शॉर्ट टर्म या लॉन्ग टर्म के लिए इन्वेस्ट करना चाहते हैं?

फाइनेंशियल लक्ष्य: आप अपने इन्वेस्टमेंट के माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?

विविधता: विभिन्न क्षेत्रों में अपने इन्वेस्टमेंट को फैलाकर जोखिम को मैनेज करने में मदद मिल सकती है, जैसे कि आपके सभी अंडे एक ही टोकरी में न डालें।

इसलिए करें इन्वेस्टमेंट महंगाई से सुरक्षा: इन्वेस्टमेंट अक्सर महंगाई की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं, जिससे आपके पैसे की वैल्यू को सुरक्षित रखा जाता है।

पैसिव आय जनरेट करें: कुछ इन्वेस्टमेंट, जैसे डिविडेंड-मुगलान स्टॉक, नियमित केश फ्लो प्रदान कर सकते हैं।

फाइनेंशियल लक्ष्य प्राप्त करें: इन्वेस्टमेंट आपको बड़े जीवन की घटनाओं, जैसे घर खरीदना या आराम से रिटायर होना आदि के लिए बचत करने में मदद करता है।

इन्वेस्ट करना शुरू करना कभी भी बहुत जल्दी नहीं है, कितनी जल्दी आप शुरू करते हैं, कंपाउंडिंग का लाभ मिलेगा।

3. अपने इन्वेस्टमेंट चुनें: आपके लिए सही महसूस करने वाले स्टॉक, बॉन्ड, रियल एस्टेट और फंड का मिश्रण चुनें।

4. नियमित रूप से इन्वेस्ट करें: हर महीने एक निश्चित राशि अलग रखने पर विचार करें यह पहले खुद को मुगलान करने की तरह है।

ऐसे करता है काम

आप किसी कंपनी (एक एसेट) में शेयर खरीदने का निर्णय लेते हैं, जिसका आपको विश्वास है कि आपके पास एक आशाजनक भविष्य है। अगर कंपनी की वैल्यू बढ़ती है, तो आपके शेयरों की कीमत भी बढ़ती है या शायद आप किसी ऐसे क्षेत्र में भूमि (संपत्ति) का लॉट खरीदते हैं जिसे आप सोचते हैं कि समय के साथ महंगा हो जाएगा। दोनों मामलों में, आपका पैसा काम करने के लिए लगाना जाता है, और अगर चीजें अच्छी तरह से चलती हैं, तो यह आपको लगातार ध्यान दिए बिना लौटाना लाता है।

- रूल ऑफ 70 से जानिए बुढ़ापे में कितना पैसा होगा काफी
- आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका
- जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल होगा
- युवावस्था से ही रिटायरमेंट को मजबूत फंड बनाना शुरू करें
- अच्छा फंड भविष्य में आर्थिक तंगी से बचाएगा, जीवन आरामदायक बनेगा

जवानी में कर लें इतना निवेश की बुढ़ापे में न गिननी पड़े परेशानियां

जानकारी

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी रिटायरमेंट प्लानिंग कर रहे हैं तो जरा ध्यान दें। आप जितना जल्दी निवेश शुरू करेंगे। उतना ही बुढ़ापे में सुरक्षित होंगे। इसलिए जरूरी है कि जवानी में निवेश कर लें कि बुढ़ापे में परेशान न होना पड़े। इसके लिए आप रूल ऑफ 70 के फार्मूले को भी फॉलो कर सकते हैं। इससे पता चल जाएगा कि बुढ़ापे अच्छे से काटने के लिए आपको कितने धन की जरूरत होगी। आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका है। अगर जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि युवावस्था से ही रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बनाना शुरू करें, ताकि भविष्य में आर्थिक तंगी से बचा जा सके और जीवन आरामदायक बना रहे।

हमेशा महंगाई का ध्यान रखें

आप भी सोचते होंगे कि अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हों, तो जिंदगी की सारी जरूरतें पूरी हो जाएंगी, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यही रकम आने वाले वक्त में आपके लिए कितनी मायने रखेगी। आज जो रकम बड़ी लगती है, वो कल को शायद उतनी काम की न हो। महंगाई हर साल धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और इसके साथ हमारी जरूरतों की कीमत भी। ऐसे में अगर आपने भविष्य की प्लानिंग सही से नहीं की, तो रिटायरमेंट के बाद दिक्कतें हो सकती हैं। कई बार हम यह मान लेते हैं कि जितना पैसा आज हमें काफी लग रहा है, वही आगे भी काफी रहेगा, लेकिन अर्थात्वात् इससे बिल्कुल अलग है। इसलिए जरूरी है कि आप आज ही यह समझें कि आपकी रकम भविष्य में कितनी टिक पाएगी और उसी के हिसाब से अपनी बचत और निवेश की योजना बनाएं।



ऐसे जानें 'रूल ऑफ 70'

आपके पैसे की वैल्यू भविष्य में कितनी रह जाएगी, यह जानने के लिए 'रूल ऑफ 70' एक सरल तरीका है। इसमें आपको बस मजबूत महंगाई दर जाननी होती है। जब आप 70 को उस महंगाई दर से भाग देंगे, तो जो संख्या निकलेगी, वह यह बताएगी कि कितने साल में आपके पैसे की आधी हो जाएगी। उदाहरण के लिए, अगर महंगाई दर 7% है, तो 70/7=10 साल। यानी 10 साल में आपके 1 करोड़ की वैल्यू 50 लाख जैसी हो जाएगी।

वर्षों जरूरी है सही फाइनेंशियल प्लानिंग

लोग अक्सर सोचते हैं कि एक तय रकम जोड़ लेना ही काफी है, लेकिन ये महंगाई के असर को नजरअंदाज कर देते हैं। केवल सेविंग्स करना काफी नहीं है, आपको यह भी समझना होगा कि वो रकम भविष्य में क्या वैल्यू रखेगी। रूल ऑफ 70 जैसे सिंपल फॉर्मूले से आप अपनी योजना को रियलिस्टिक बना सकते हैं। इससे आपको साफ नजर आएगा कि भविष्य में कितना पैसा वाकई जरूरी होगा।

स्मार्ट प्लानिंग

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए युवावस्था से ही बचत और निवेश शुरू करें। हर महीने आय का कम से कम 20% रिटायरमेंट फंड में डालें। एसआईपी, पीपीएफ, और म्यूचुअल फंड जैसे विकल्प अपनाएं। महंगाई दर को ध्यान में रखते हुए फंड टारगेट तय करें। रूल ऑफ 70 से समझें पैसे की घटती वैल्यू और उसी अनुसार लॉन्ग टर्म प्लान तैयार करें।

सही लक्ष्य तय करें

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए जरूरी है कि आप जल्द से जल्द निवेश शुरू करें। नियमित रूप से अपने फाइनेंशियल टारगेट्स की समीक्षा करें। बाजार की स्थितियों और महंगाई के हिसाब से अपनी रणनीति में बदलाव करते रहें। याद रखें, समय के साथ रुपये की वैल्यू घटती है, लेकिन सही प्लानिंग से आप अपनी भविष्य की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

विकल्पों का विश्लेषण

निवेश की प्लानिंग एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निवेश रणनीति तैयार करते हैं। इसमें निवेश के उद्देश्यों, जोखिम सहनशक्ति, समय सीमा, और निवेश विकल्पों का विश्लेषण करना शामिल है। निवेश के उद्देश्यों को निर्धारित करना, जैसे कि आय अर्जित करना, पैसे का बढ़ना, या भविष्य के लिए बचत करना। निवेश की प्लानिंग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति या संगठन को अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है।



ग्रीन एफडी : सुरक्षित निवेश के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी करें योगदान

अभी सभी बैंक ग्रीन डिपॉजिट की सुविधा नहीं दे रहे हैं। फिर भी, कई बड़े सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों ने इस दिशा में कदम उठाया है। मोहित गांग के मुनाबिक, एसबीआई, बैंक ऑफ इंडिया, एक्सिस बैंक, केनरा बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक, एयू.एस.एल. फाइनेंस बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक और बैंक ऑफ बड़ोदा जैसे बैंक ग्रीन डिपॉजिट योजनाएं शुरू कर चुके हैं।

बचत

बिजनेस डेस्क

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी चुनौतियों से जूझ रही दुनिया अब निवेश के तरीकों में भी धीरे-धीरे बदलाव कर रही है। इन्होंने नए नए तरीकों के बीच भारत में अब एक नया फाइनेंशियल प्रोडक्ट तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस लोकप्रिय प्रोडक्ट को नाम दिया है ग्रीन डिपॉजिट। यह एक ऐसा निवेश विकल्प है, जो न केवल सुरक्षित और अच्छा रिटर्न देता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून 2023 में ग्रीन डिपॉजिट के लिए एक स्ट्रक्चर जारी किया था, जिसमें बैंकों को जमा पैसे को सिर्फ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में लगाने की अनुमति दी गई है। इस प्रोजेक्ट्स में मुख्य रूप से सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक गाड़ियां, पानी और वेस्ट मैनेजमेंट आदि शामिल होते हैं। ग्रीन डिपॉजिट एक सामान्य फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की तरह ही है, लेकिन इसका अंतर कहीं अधिक बड़ा और पॉजिटिव है। इसमें बैंकों को सालाना रिपोर्टिंग और थर्ड पार्टी ऑडिट जैसी पारदर्शिता की शर्तें पूरी करनी होती हैं, जिससे निवेशकों को भरोसा मजबूत होता है। स्टेट बैंक, एक्सिस, यूनियन बैंक जैसे कई बड़े बैंक इस विकल्प को पेशकश कर रहे हैं। अगर आप एक ऐसा निवेश चाहते हैं जो आपको आर्थिक लाभ के साथ-साथ धरती को भी लाभ पहुंचाए, तो ग्रीन डिपॉजिट एक समझदारी भरा कदम हो सकता है।

रुपये तक हो सकती है। जमा करना होता है। जमा करने का समय और ब्याज दर बैंक के नियमों पर निर्भर करती है। इस पैसे को डीआईसीजी की तहत बीमा किया जाता है, जिससे निवेशकों का पैसा सुरक्षित रहता है।

नियमों और पारदर्शिता
दूसरा अंतर नियमों और पारदर्शिता में है। ग्रीन डिपॉजिट पर भारतीय रिजर्व बैंक की पूरी नजर रहती है और इन्हें लिफ्ट अलग से दिशानिर्देश हैं। इसकी वजह से बैंकों को फंड्स के उपयोग की पूरी जानकारी देने और हर साल ऑडिट करवाना पड़ता है। इसके विपरीत, एफडी में ऐसी कोई शर्त या पारदर्शिता की जरूरत नहीं होती। ब्याज दरों की बात करें तो ग्रीन डिपॉजिट की दरें सामान्य एफडी के बराबर या कभी-कभी थोड़ी अधिक हो सकती हैं, क्योंकि बैंक पर्यावरण के प्रति जागरूक निवेशकों को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी अच्छे दरें ऑफर करते हैं। एक और जरूरी अंतर नैतिक प्रभाव का है। ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करके व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान देता है, जो इसे एक नैतिक और जिम्मेदार निवेश विकल्प बनाता है। सामान्य एफडी में ऐसा कोई पर्यावरणीय या सामाजिक प्रभाव नहीं होता।

ग्रीन डिपॉजिट के क्या फायदे
ग्रीन डिपॉजिट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह निवेशकों को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का मौका देता है। अगर आप जलवायु परिवर्तन या प्रदूषण जैसी समस्याओं को लेकर चिंतित हैं, तो यह योजना आपके पैसे को सही दिशा में लगाने का एक तरीका है। इसके अलावा, इसकी ब्याज दरें सामान्य एफडी की तुलना में प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिससे निवेशकों को आर्थिक लाभ भी मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए भी खास है, जो अपने निवेश को पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानकों के आधार पर करना चाहते हैं। ग्रीन डिपॉजिट के जरिए निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते हैं और साथ ही पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभा सकते हैं। बैंकों द्वारा हर साल दी जाने वाली रिपोर्ट और तीसरे पक्ष के ऑडिट से निवेशकों को यह भरोसा रहता है कि उनका पैसा सही जगह पर इस्तेमाल हो रहा है। साथ ही, डीआईसीजी की तहत बीमा होने से यह निवेश पूरी तरह सुरक्षित भी है।

एफडी से कितना अलग है ग्रीन डिपॉजिट
ग्रीन डिपॉजिट और एफडी में कई समानताएं हैं। हालांकि, कुछ बुनियादी अंतर दोनों को अलग बनाते हैं। सबसे बड़ा अंतर यह है कि ग्रीन डिपॉजिट में जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाले परियोजनाओं में किया जाता है, जबकि एफडी में जमा पैसे का इस्तेमाल बैंक अपने सामान्य कारोबार, लोन देने या दूसरे निवेश में उपयोग कर सकता है। इस तरह ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करने वाला हर एफडी की तरह ही होती है। निवेशक को एक निश्चित पैसा (जो आमतौर पर 5,000 रुपये से शुरू होकर 10 करोड़

यह कैसे करता है काम
ग्रीन डिपॉजिट में निवेशक अपने पैसे को बैंक में एक निश्चित समय के लिए एफडी की तरह जमा करते हैं, और बदले में उन्हें उसका ब्याज मिलता है, लेकिन इस योजना की खासियत यह है कि जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल केवल उन परियोजनाओं में किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद हों। इन परियोजनाओं में सौर और पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए ही रहे काम, पानी, वेस्ट मैनेजमेंट और ग्रीन बिल्डिंग आदि शामिल हो सकते हैं। बैंकिंग एक्सपर्ट कहते हैं, 'जब कोई व्यक्ति या संस्था ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करता है, तो बैंक उस पैसे को ऐसी परियोजनाओं के लिए लोन देने या निवेश करने में उपयोग करता है।

ऐसे समझें उदाहरण
उदाहरण के लिए, यह पैसा सौर ऊर्जा प्लांट बनाने, इलेक्ट्रिक गाड़ियां बनाने आदि को बनाने या फिर उसके लिए रिसर्च में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त नियम बनाए हैं कि इन फंड्स का उपयोग केवल इन्होंने चीजों के लिए ही हो। बैंकों को हर साल इन फंड्स के उपयोग और उनके होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव की जानकारी सार्वजनिक करनी होती है।

यह क्यों है जानकार
ग्रीन डिपॉजिट में निवेश की प्रक्रिया एफडी की तरह ही होती है। निवेशक को एक निश्चित पैसा (जो आमतौर पर 5,000 रुपये से शुरू होकर 10 करोड़

नवाचार-विरोधी भी

- डिजिटल एवं आईटी के काम के लिए टैडर की प्रक्रिया में हिस्सा लेने वाली एक प्रमुख कंपनी एमनक्स टेक्नोलॉजी का कहना है कि यह सिर्फ खराब खरीद प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह नवाचार-विरोधी भी है। यह सरकार के 'मेक इन इंडिया' और 'ओपन इनोवेशन' के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है।
- वहीं वित्त मंत्रालय में विरिष्ठ सलाहकार के पद पर काम कर चुके एक अधिकारी ने बताया कि टैडर प्रक्रिया में किसी विशेष शर्त को जोड़ना पहुंचाने के लिए शर्तों का निर्धारण जीएफआर एवं सौदागरी के नियमों का उल्लंघन है। उनके मुताबिक, अगर प्रतियोगिता का बयार सीमित होगा, तो बीबी की कीमतें बाजार के अनुरूप नहीं होंगी।

ईपीएफओ के लिए आगे की राह

- ईओआई जमा करने की अंतिम तिथि जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, ईपीएफओ पर यह दबाव बढ़ रहा है कि वह इस प्रक्रिया की समीक्षा करें, और योग्यताओं को कार्य-आधारित और समाधान-उन्मुख तरीके से परिभाषित करें। साथ ही इस प्रक्रिया में तकनीकी रिपोर्टिंग को प्रमुखता दी जाए। मूल्यांकन की प्रक्रिया में विविध पारदर्शी मानक जोड़े जाएं साथ ही पूरी प्रक्रिया में निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया जाए।

माना जा रहा है कि जब प्रतिस्पर्धा सीमित होती है तो मूल्य निर्धारण पारदर्शी नहीं रह जाता। इससे परियोजना की लागत अनावश्यक रूप से बढ़ने की आशंका रहती है। ईपीएफओ के टेंडर में अगर अधिक से अधिक कंपनी हिस्सा लेगी तो इसका लाभ उन्हें ही होगा और प्रतिस्पर्धा की वजह से ईपीएफओ को कम लागत में एक बेहतर सेवा प्रदाता कंपनी की सेवा मिलेगी।



ईपीएफओ के डिजिटल प्लेटफॉर्म में हो रहा बदलाव, आखिर क्या होगा असर

बिजनेस डेस्क

देश के 27 करोड़ से अधिक कामगारों की बचत की संरक्षक संस्था के रूप में कार्य कर रही कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने 14 जुलाई 2025 को अपने आईटी सिस्टम (ईपीएफओ प्लेटफॉर्म) पर व्यापक बदलाव की तैयारी शुरू कर दी है। स्वभाविक है कि इस बदलाव से लोगों पर व्यापक असर भी दिखाई देगा। कुछ राहत मिलेगी तो कुछ खतरे भी बढ़ सकते हैं। ईपीएफओ के इस बदलाव से जुड़ी हालिया प्रक्रिया विशेषकर एजेंसी के चयन हेतु जारी एक्सप्रेशन ऑफ इंटेरेस्ट (ईओआई) को लेकर विशेषज्ञों और उद्योग जगत ने पारदर्शिता, निष्पक्षता और संभावित पक्षपात को लेकर गहरी चिंता जताई है। एक्सप्रेशन ऑफ इंटेरेस्ट दस्तावेज में एक प्रमुख शर्त यह है कि बोलीदाता ने प्रस्तावित कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) को किसी अनुसूचित कॉर्पोरेट बैंक में लागू किया हो। पहली नजर में यह

एक सामान्य, अनुभव आधारित मानदंड लगता है, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह शर्त ईपीएफओ की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। खातों का रख-रखाव, अंशदान प्रबंधन, पेंशन का वितरण आदि है। इसके लिए एक मजबूत, स्केलेबल और यूजर-फ्रेंडली डिजिटल प्लेटफॉर्म जरूरी है, लेकिन इसके लिए कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) की अनिवार्यता अप्रासंगिक मानी जा रही है। इसका कारण ये है कि ईपीएफओ का काम कोर बैंकिंग से संबंधित नहीं है। ईओआई की भाषा से यह प्रतीत होता है कि बैंकिंग क्षेत्र को सेवा देने वाली कंपनी को प्राथमिकता दी जा रही है। प्री-बिड मीटिंग में शामिल कंपनियों ने यह भी ये सवाल उठाये किया कि दस्तावेज में वर्णित तकनीकी विशिष्टताएँ एक कंपनी विशेष की क्षमताओं से काफी नैद खाती हैं। कर्मचारियों ने ईपीएफओ पोर्टल पर क्वेरी जेनेरेट कर अपनी चिंता व्यक्त की लेकिन ईपीएफओ ने कंपनियों के सभी आपत्त को दफिनार कर दिया।

नवाचार की राह में बाधा

ईओआई की शर्तों से कई प्रतिष्ठित कंपनियां इस काम के लिए बिड की करने की प्रक्रिया से बाहर हो सकती हैं, खासकर निम्नोले डिजिटल गवर्नेंस और सार्वजनिक सेवाओं के लिए बेहतरीन समाधान विकसित किए हैं लेकिन बैंकिंग सोल्यूशन पर काम नहीं किया है। ईओआई बैंक केवल में भाग लेने वाली प्रमुख कंपनियों टीसीएस, इन्फोसिस, विप्रो, सीआईटीपीएल, एडवैन्स, एचसीएल सॉफ्टवेयर और फिनिसल थीं। जबकि केवल एक-दो कंपनियां ही सीबीएस का अनुभव रखती हैं।

इस पर क्या है विशेषज्ञों की राय

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं है। इसकी कार्यपणनी सार्वजनिक सेवा मंच जैसी है। ऐसे में बैंकिंग सोल्यूशन की अनिवार्यता तकनीकी दृष्टि से गैरजरूरी और रणनीतिक रूप से ग़मक है। -पवन दुग्गल, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सायबर सुरक्षा विशेषज्ञ

उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं

यह आरएफपी किसी खास उत्पाद के लिए रिवर्स इंजीनियरिंग लगती है। ये बहुत ही रिस्कीविट है एवं इसका उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं, बल्कि समाधान में किसी खास बोलौदाता (बिडर) को लाभ पहुंचाना है। -अनूप प्रकाश अवस्थी, टेक्नोलॉजी एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट।

खबर संक्षेप



मिनिस्ट्रीयल स्टार अवाइड मिलाने पर दी बधाई

सोनीपत। दि हरियाणा अनुसूचित जाति पिछड़े वर्ग अल्पसंख्यक परिषद द्वारा शनिवार को मेयर राजीव को बधाई दी गई। मेयर से मिलकर परिषद के पदाधिकारियों ने बताया कि नगर निगम को स्वच्छता सर्वेक्षण में मिनिस्ट्रीयल स्टार अवाइड मिला है। इसी वजह से मेयर को बधाई दी गई।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार घायल

खरखौदा। खरखौदा-दिल्ली मार्ग पर सैतपुर गांव में किसी अज्ञात वाहन ने एक बाइक को टक्कर मार दी और चालक मौके से फरार हो गया। घायल तरुण को रोहताक के निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। जिसकी हालत गंभीर बनी हुई है। घायल के साले अभिषेक की शिकायत पर पुलिस अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

किशोरावस्था के परिवर्तन को समझना जरूरी

गोहाना। हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा बरोदा रोड स्थित बाल भारतीय विद्यापीठ में सेमीनार आयोजित किया गया। सेमीनार किशोरावस्था में होने वाले बदलावों को समझें, प्राचार्य संचालक हरिप्रकाश गौड़, प्राचार्य सुमन कौशिक विशेष रूप से मौजूद रहे। नोडल अधिकारी अनिल मलिक ने कहा कि किशोरावस्था निरंतर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व भावनात्मक परिवर्तनों का समय है और इन्हें स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है।

सेफ इंडिया फाउंडेशन ने करवाया अंतिम संस्कार सोनीपत।

सेफ इंडिया फाउंडेशन ने शुक्रवार को तिरंगा चक्र शमशानघाट में एक युवक का अंतिम संस्कार करवाया। भाजपा नेत्री सुनीता लोहचब ने बताया कि ब्रह्म कालीनी को एक गरीब महिला के 24 वर्षीय बेटे का बीमारी से निधन हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए प्रधान संजय सिंगला, चैयर्समैन वाईके ल्यागी व उपप्रधान प्रवीण वर्मा से संपर्क किया।



स्कूल में 31 पौधे वितरित कर मनाया जन्मदिन

सोनीपत। हरियाणा वैदिक स्कूल में रेहान सिंह ने अपने जन्मदिवस पर बच्चों व स्पोशल बच्चों के साथ कैंक काटकर मनाया। बच्चों में रेहान के लिए विशेष गीत गाए और उनके साथ नृत्य किया। इस दौरान रेहान सिंह ने 31 पौधे वितरित किए। प्राचार्य डॉ. नीलम सांगवान ने जन्मदिन की हार्दिक बधाई दी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलाने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अत्या अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 0130-2989288, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धांजलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से
साईज संस्करण विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी स्थानीय संस्करण के छ. 2000/-
10 X 8 सें.मी अन्दर के पृष्ठ पर छ. 2500/-
+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मात्र। अन्य किसी साईज के लिए कॉल करें संपर्क।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

भगवान शिव भोले की वेशभूषा, प्रतीकों में छिपे कई गूढ़ रहस्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

हिंदू धर्म के समस्त देवी-देवताओं में भगवान शिव की वेशभूषा सबसे विचित्र, रहस्यमयी और आध्यात्मिक संदेशों से परिपूर्ण मानी जाती है। वे योग, तप, तितिक्षा और वैराग्य के ऐसे प्रतीक हैं, जिनकी प्रत्येक वस्तु जटा से लेकर डमरू तक जीवन दर्शन को गहराई से समझाने वाली है। आचार्य मनमोहन मिश्रा कहते हैं कि भगवान शिव की प्रतीकात्मक वेशभूषा का अर्थ जान लेने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति संभव हो सकती है। महादेव की यह रहस्यमयी वेशभूषा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि प्रत्येक प्रतीक में जीवन का सार समाहित है। यही कारण है कि शिव केवल पूजनीय नहीं,

वेशभूषा का अर्थ जान लेने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति संभव, जीवन दर्शन को गहराई से समझाते डमरू से जटा तक

मस्तक पर चंद्रमा: मन पर विजय का प्रतीक

शिव के मस्तक पर विराजमान चंद्रमा अलंकरण नहीं, बल्कि वह चंचल मन पर नियंत्रण का प्रतीक है। शीतल चंद्रमा शीतलता का संदेश देता है। मन को शांत कर संयमित जीवन जीने का रास्ता दिखाता है। इसीलिए शिव को 'चंद्रशेखर' कहा जाता है।

बल्कि आत्मचिंतन और मोक्ष के मार्गदर्शक भी हैं। उन्होंने सबसे पहले भगवान शिव की तीसरी आंख के बारे में बताया कि यह केवल उनका शारीरिक लक्षण नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है। ललाट में स्थित यह नेत्र 'आज्ञा चक्र' का प्रतिनिधित्व करता है, जो बुद्धि और विवेक का केन्द्र है। शिव का यह तीसरा नेत्र दर्शाता है कि जब संसार की माया से परे होकर आत्मा

ईश्वर को स्वीकार करती है, तभी सच्चे ज्ञान की प्राप्ति होती है।

त्रिशूल: तीन गुणों पर नियंत्रण का संदेश

शिव के हाथ में स्थित त्रिशूल तीन गुणों सात्विक, राजसिक और तामसिक का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि जिसने इन प्रवृत्तियों पर नियंत्रण पा लिया, वही आत्मज्ञान प्राप्त कर सकता है। त्रिशूल केवल शस्त्र नहीं, बल्कि जीवन के संतुलन



आचार्य मनमोहन मिश्रा।

गले में विराजमान नाग: कुंडलिनी का रहस्य

शिव के गले में लिपटा हुआ सर्प केवल भय का नहीं, बल्कि कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है। यह योग की उस सुप्त शक्ति का संकेत

मरुत : संसार की क्षणभंगुरता का बोध

शिव के शरीर पर लगी मरुत यह दर्शाती है कि यह संसारमें क्षणिक है। सबकुछ नश्वर है, अंत में केवल राख ही बचती है। मरुत जीवन के मोह, माया और पाप से दूर रहने का संदेश देती है और आत्मा को सत मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती है।

है जो मनुष्य के भीतर ही है, जिसे जागृत कर ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है।

शिव का डमरू : नाद ब्रह्म का स्वरूप

भगवान शिव का प्रिय वाद्य यंत्र डमरू 'नाद' का प्रतिनिधित्व करता है। यह वही ध्वनि है जिसे ब्रह्मांड में 'ओम' के रूप में निरंतर सुना जा सकता है। यह ध्वनि सृजन और संतुलन का संकेत देती है। शिव जब

डमरू बजाते हैं, तब सृष्टि में आनंद और चेतना की लहर फैलती है।

शिव की जटाएं : ब्रह्मांडीय सत्ता का प्रतीक

भगवान शिव की जटाएं ब्रह्मांडीय वायुमंडल और आकाश की प्रतीक मानी जाती हैं। इन जटाओं से ही गंगा अवतरित होती है, जो सृष्टि की शुद्धि और जीवन के प्रवाह को दर्शाती है। शिव की यह भंगिमा दर्शाती है कि वे समस्त ब्रह्मांड के आधार हैं।

शिव मंदिर में कलश यात्रा के साथ होगी मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा

सोनीपत। संत कबीर दास समाज उत्थान सेवा समिति कबीरपुर और निवासियों द्वारा वार्ड 13 कबीरपुर की धानक चौपाल में सोमवार को शिवरात्रि पर श्री शिव मंदिर में सावन महीने के अवसर पर कलश यात्रा एवं मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा होगी। महासचिव सुरज कुमार ने बताया कि दिनांक 19 से 20 जुलाई तक धानक चौपाल श्री शिव मंदिर में प्रशिद्ध पंडित सत्यनारायण पाण्डेय और ग्रामवासियों द्वारा भगवान शिव शंकर जी के भजन, हवन और शिव महापुराणका जाप होगा। 21 कलश यात्रा और मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी। 23 जुलाई को प्राण प्रतिष्ठा और जीवन के प्रवाह को दर्शाती है। शिव की यह भंगिमा दर्शाती है कि वे समस्त ब्रह्मांड के आधार हैं।

ग्लोबल पब्लिक स्कूल के देव स्टेट चैंपियनशिप के लिए चयनित

मुक्केबाजी चैंपियनशिप में देव के मुक्के पड़े सब पर भारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

सब जूनियर मुक्केबाजी चैंपियनशिप में खानपुर कलां गांव स्थित ग्लोबल पब्लिक स्कूल के मुक्केबाज देव के मुक्के अपने सब प्रतिद्वंद्वियों पर भारी पड़े। देव ने इस चैंपियनशिप में प्रथम स्थान प्राप्त करके स्वर्ण पदक हासिल किया। शनिवार को स्कूल में एमडी पंकज जाले और प्राचार्या प्रीति शर्मा ने पदक विजेता को पदक एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।



गोहाना। पदक विजेता देव को सम्मानित करते हुए एमडी पंकज जाले व अन्य शिक्षकगण। फोटो : हरिभूमि

16 व 17 जुलाई को गोहाना में जिला स्तरीय सब जूनियर मुक्केबाजी चैंपियनशिप आयोजित की गई। मुक्केबाज देव ने इस चैंपियनशिप में 64 से 67 किलोग्राम भारवर्ग में अपने सब प्रतिद्वंद्वियों को अपने मुक्के के प्रहार से पराजित कर दिया। इस शानदार प्रदर्शन के आधार पर उनका चयन 24 से 27 जुलाई को हिसार में आयोजित होने वाली राज्यस्तरीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप के लिए कर लिया गया। देव की इस उपलब्धि से पूरे स्कूल में खुशी का माहौल है। स्कूल प्रबंधन द्वारा पदक विजेता देव के साथ उनको कोच संदीप सहराया को भी सम्मानित किया।

ओपन नेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में समीहा और वनिषा ने जीते स्वर्ण पदक

सोनीपत। ज्ञान गंगा ग्लोबल स्कूल (जी-3) की ताइक्वांडो खिलाड़ी समीहा व वनिषा ने इंदिरा गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स शिमला में आयोजित ओपन नेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में अपने-अपने आयु व वजन भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीते। शनिवार को स्कूल में दोनों पदक विजेताओं का जोरदार स्वागत किया गया। इस अवसर पर स्कूल के चैयर्समैन सुधीर जैन, सीईओ संजय जैन, डायरेक्टर ध्रुव जैन, प्राचार्या गीता चोपड़ा व उप प्राचार्या रूपा दास ने समीहा व वनिषा को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर कोऑर्डिनेटर नीरजा, महक व गीता राणा, श्वेता, नमिता, संगीता, मधु, मीनाक्षी, मोनिका, बीना, कुसुम, ज्योति, सोनिया मदान, निशा, सीमा रानी, पाउल, कावेरी, पीटीआई आरखी मौजूद रहे।

शिक्षक भी अब खेलेंगे शह: मात का खेल

सोनीपत। जिले में रविवार को विश्व शतरंज दिवस के उपलक्ष्य में शिक्षकों के लिए शतरंज प्रतियोगिता होगी। जिला शतरंज संघ की सचिव स्निग्धा गोयल ने बताया कि प्रतियोगिता जिले के सभी सरकारी विद्यालयों में आयोजित होगी। इस बार प्रतियोगिता छात्रों के लिए नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए होगी, जो इसे विशेष और अनूठा बनाती है स्निग्धा गोयल ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य शिक्षकों की तर्कशक्ति, गणितीय सोच, मानसिक अनुशासन और खेल भावना को प्रोत्साहित करना है। प्रतियोगिता में महिला और पुरुष शिक्षक समान रूप से भाग ले सकेंगे। यह आयोजन जिला स्तर पर होगा और विजेताओं को नकद पुरस्कार दिए जाएंगे, जिसके तहत प्रथम पुरस्कार 2000, द्वितीय 1500 और तृतीय 1000 रुपये का इनाम दिया जाएगा। एससीईआरटी ने निर्देश दिए हैं कि प्रतियोगिता में अधिक से अधिक शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इसके लिए जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। जिला शतरंज संघ ने सभी सरकारी शिक्षकों से अपील की है कि वे इस अवसर पर शतरंज खेल में भाग लेकर अपनी विशेषताओं को प्रदर्शन करें।

मंदिर के पास से सफाई अभियान का आगाज

नगर निगम मेयर राजीव जैन की अगुवाई में सफाई की गई फिरनी और गलियां।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

नगर निगम मेयर राजीव जैन की अगुवाई में शनिवार को गांव रेवली, गढ़ी ब्राह्मणान तथा गांव जगदीशपुर में सफाई अभियान चलाया गया। सफाई अभियान रेवली गांव में मंदिर के पास से शुरू हुआ और फिरनी एवं गलियों की सफाई की। ग्रामीणों ने गांव में पाक बनवाने की मांग रखी जिस पर मेयर ने आश्वासन दिया कि जल्द ही ढाई करोड़ की लागत से पार्क का निर्माण होगा। गांव गढ़ी ब्राह्मणान में महलाना रोड से शुरू हुआ अभियान लगातार चार घंटे तक पूरे गांव में चलाया गया। गांव



सोनीपत। सफाई अभियान के दौरान मेयर राजीव जैन साथ में सफाई कर्मचारी।

एडीजीपी व पुलिस आयुक्त ने कावड़ रूट का दौरा कर नाकों का किया निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

कावड़ यात्रा को लेकर पुलिस प्रशासन सतर्क है। शनिवार को एडीजीपी व सोनीपत की पुलिस आयुक्त ममता सिंह ने कावड़ रूट का दौरा किया। उन्होंने क्षेत्र में लगाए गए नाकों का निरीक्षण किया व तैनात पुलिसकर्मियों को निर्देश। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश से हरियाणा होते हुए अन्य राज्यों की ओर जाने वाले कावड़िए मुख्य रूप से एनएच 334 बी मार्ग का प्रयोग करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए जिला पुलिस ने विशेष रूट मैप तैयार किया है और उसी के अनुसार नाकाबंदी की गई है। पुलिस आयुक्त ने कहा कि कावड़ियों की सुरक्षा के साथ-साथ आमजन व वाहन चालकों को भी किसी प्रकार की असुविधा न हो। ट्रैफिक व्यवस्था में



खरखौदा। पुलिस द्वारा की गई व्यवस्था का निरीक्षण करते अधिकारी

लापरवाही न बरती जाए और जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त पुलिस की भी तैनाती की जाए, ताकि किसी प्रकार की परेशानी इस दौरान न आये। इस मौके पर डीसीपी नरेंद्र कादयान, डीसीपी कुशल सिंह, एसीपी हेड सॉफ्टवेर अजीत सिंह, एसीपी खरखौदा राहुल देव, एसडीएम डा. निर्मल नारप भी मौजूद रहे।

‘एक पेड़ माँ के नाम’ कार्यक्रम में किया पौधरोपण

रावमावि गन्नौर मंडी में किया गया कार्यक्रम का आयोजन।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गन्नौर

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रेरणास्पद कदम उठाते हुए राजकीय माध्यमिक विद्यालय गन्नौर मंडी-एक में गणक पेड़ माँ के नाम विशेष पौधारोपण अभियान का भव्य आयोजन किया गया। अभियान की अगुवाई विद्यालय के मुख्यध्यापक रामफल द्वारा की गई, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण को सामाजिक जिम्मेदारी मानते हुए विद्यार्थियों और स्टाफ को पौधे वितरित किए और उन्हें हर छात्र के जीवन में हरियाली का महत्व समझाया। छात्रों को करीब 400 पौधों वितरण किए।



मुख्यध्यापक रामफल व पीटीआई बबीता मलिक छात्रों को पौधे वितरित करते हुए।

हमारे जीवन को स्वच्छ वायु और पर्यावरणीय संतुलन देकर संरक्षित की करते हैं। उन्होंने बच्चों से आह्वान किया कि वे इस पौधे को अपनी माँ के नाम समर्पित करें और उसी स्नेह व देखभाल से उसका पालन-पोषण करें जैसे एक माँ अपने बच्चे की करती है। इस भावनात्मक जुड़ाव ने



विद्यार्थियों को सिखाया गुरु का जीवन में महत्व

सोनीपत। विवेकानंद केंद्र कल्याणपुरी, शाखा सोनीपत द्वारा गवर्नमेंट बॉयज वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मुखल में गुरु के महत्त्व पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुल उपस्थिति लगभग 212 रही जिसमें 200 बच्चे, 9 अध्यापक/अध्यापिका तथा 3 विवेकानंद केंद्र, सोनीपत के सदस्य शामिल हुए। विवेकानंद केंद्र के सदस्य डॉ. सुधीर मार्ग ने एक पौराणिक कथा के माध्यम से बच्चों को एक गुरु का एक व्यक्ति के जीवन में क्या महत्त्व होता है, इसके बारे में समझाया। संजय भट्टानी ने भारत की पुरानी शिष्य परंपरा से बच्चों को अवगत कराया तथा बच्चों से भी स्वागत-जवाब कर उनकी जानकारी साझा की। उन्होंने असतो मा सद्गमय जैसे वाक्यों का महत्त्व बताते हुए गुरु शिष्य सम्पर्ण के महत्त्व की जानकारी दी। प्राचार्या कविता रानी व शिक्षक शास्त्री ने भी अपने विचारों में गुरु का महत्त्व बताते हुए विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया। अनिल वृष ने व्यवस्था का कार्य देखा। कार्यक्रम में एकत्र सभी स्कूल के बच्चों, शिक्षकों व विवेकानंद केंद्र के सदस्यों में काफी उत्साह का माहौल था। विवेकानंद केंद्र सोनीपत शाखा द्वारा प्राचार्या को स्मृति चिन्ह दिया। विवेकानंद केंद्र के सदस्यों, अध्यापक/अध्यापिकाओं का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

पबनेरा में रिटेनिंग वाल का निर्माण शुरू, जलभराव से मिलेगी मुक्ति



हरिभूमि न्यूज ▶▶ गन्नौर

विधायक देवेन्द्र कादियान ने गांव पबनेरा और चंदौली में करीब 30 लाख रुपए के विकास कार्यों का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इस दौरान ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं भी रखीं जिस पर विधायक ने अधिकारियों को फोन कर समाधान के निर्देश दिए। विधायक कादियान ने बताया कि पबनेरा गांव में तालाब की रिटेनिंग

बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल में हिंदी इंटर हाउस विजय प्रतियोगिता

गन्नौर। बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल में हिंदी इंटर हाउस विजय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कक्षा चौथी व पांचवी के छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में चार हाउस-प्रेस्टीजा, डिमिटी, डिवाइन और ग्लोरी के छात्रों ने अपनी प्रतिभा दिखाई। प्रतियोगिता में डिवाइन हाउस से शिवम, प्रत्युष, दिशिका विजेता रहे। डिमिटी हाउस से रीमा, भाव्य मोर, उद्व व ग्लोरी हाउस से शनाया, निहाल, रिशु, अनु प्रीति, देवेन्द्र, सपना, सरिता, शोतल, सुमन लता, सोनू, धर्मेश, कृष्ण लाल, अनु ने कार्यक्रम का सफल बनाने में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
आवश्यकता है
भारत के तेजी से बढ़ते हिन्दी समाचार-पत्र **हरिभूमि** को **सोनीपत** शहर में डोर-टू-डोर मार्केटिंग के लिए उत्साही, योग्य व आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक-युवतियों की आवश्यकता है, जो मीडिया के क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते हैं
आयु : 18 से 30 वर्ष तक
योग्यता : 10+2 या इससे अधिक
वेतन : योग्यतानुसार (वेतन वृद्धिगत अनुसूचक)
मिलने का समय : प्रातः 11.00 से सायं 5.00 बजे तक (कार्यदिवस को)
अपना बायोडाटा **सोवाइल नं. 9253681005 पर व्हाट्सअप करें या hbcircuitk@gmail.com** मेंल करें।
सम्पर्क करें :- **हरिभूमि कार्यालय**
बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 0130-2989288, 8814993443, 9253681005

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

जीवन में सबसे सुहाने दिन बचपन के ही होते हैं। उस दौर से जुड़ी यादें हम कभी नहीं भूल पाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम बड़े हो गए तो अब बच्चों जैसी हरकतें नहीं कर सकते। जब भी मौका मिले, कुछ पल के लिए ही सही फिर से बच्चा बनकर देखिए, आपका तनाव गायब हो जाएगा और लाइफ को भरपूर एंजॉय कर पाएंगे।

कभी-कभी बन जाएं बच्चे जी भर कर लैंग्विज एंजॉय



अपनी जिंदगी में रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के बोझ से व्यथित होकर अक्सर हम अपने बचपन के दिनों की मस्ती, बेपरवाही और उन दिनों से जुड़ी कुछ खास बातों को याद करके उदास हो जाते हैं और अनायास ही बोल पड़ते हैं, *बचपन के दिन भी क्या दिन थे, उड़ते फिरते थे तितली बन/कई बार मन में ऐसा भी खयाल आता है कि सब के सपनों को साकार करने में, दुनिया की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश में, कितना थक जाते हैं हम। हम सोचने लगते हैं कि काश, फिर से वो बेफिक्री आ जाए, जो बचपन के दिनों में हुआ करती थी।* वाल्ट डिजनी ने कहा था, *‘इस दुनिया की मुश्किल यह है कि बहुत सारे लोग बड़े हो गए हैं।’*

नहीं भूलते वो मस्ती भरे दिन

इस दुनिया में शायद ही कोई शख्स होगा, जो अपने बचपन के दिनों में लौट जाने की ख्वाहिश ना रखता हो। जब जिम्मेदारियां कम थीं और खुशियां बेगुमारा। होमवर्क को झटपट पूरा किया और घर से बाहर निकल गए कॉलोनी के पार्क में, मकान की छत पर या अपनी बालकनी में। कभी मिट्टी में लथपथ हुए, तो कभी बारिश के पानी में भीगे। बाजार से गेंद नहीं ला पाए तो रद्दी कागजों का गोला बनाकर खेलने लगे। महर्गें खिलौने ना हों तो कागज की नाव या पतंग ही सही। बस मस्ती चाहिए थी, हर कीमत पर।

करें ऐसा, जिसमें आए मजा

आप चाहें तो आज अपने बचपन वाली उम्र भले वापस ना ला सकें, लेकिन 40, 50, 60 साल के होने के बावजूद दिल बचपन का ला सकता है। इससे न सिर्फ आपको अनूठी खुशी मिलेगी बल्कि स्ट्रेस लेवल भी कम होगा। याद कीजिए बचपन में हम कितने

क्रिएटिव होते थे। हमारे पास हर चीज का विकल्प था। माचिस की बेकार डिब्बियों से टीवी जैसी आकृति बना लेते थे। अखबारों या पत्रिकाओं से कटी तस्वीरों को एक के बाद एक चिपका कर लंबा करना फिर उनके दोनों सिर पर 2 तिनकों में लपेटना। फिर डिब्बी बीच से काटकर स्क्रीन बनाकर तिनके घुमाते हुए अलग-अलग तस्वीरें



देखना। एक रुपए के लट्टू या 2 रुपए की गेंद से दिनभर खेलना, मस्ती करना। कागज की नाव बनाकर उसे बरसात के पानी में चलाना। चित्रकारी, डांस, कॉमिक्स पढ़ना, किसी गीत की पैरोडी बनकर उसे गुनगुनाना हमें कितना प्रफुल्लित करता था। अब भी क्या बिगड़ा है। अब भी आप ऐसी क्रिएटिव एक्टिविटी अपनाएं, जो आपको खुशी दे। कुकिंग, डॉसिंग, सिंगिंग, ड्राइंग कुछ भी कीजिए ताकि कुछ देर अपनी जिम्मेदारियों को भूल कर उसमें व्यस्त हो जाएं।

याद करिए गुजरे हुए दिन

किसी ने कहा है, *‘टूटे बर्तन को खिलौना बना लेते हैं, हम बच्चे हैं हर जगह आशियाना बना लेते हैं।’* अगर इसी सिद्धांत पर आज भी चलें तो आप खूब खुश रहेंगे। अगर आप संयोगवश अभी उसी शहर में रहते हैं, जहां आपका जन्म हुआ और बचपन बीता तो

कभी उस गली या मोहल्ले में जाइए, जहां आपने बचपन बिताया और उन दिनों को शिद्दत से याद कीजिए। उस मकान के अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले लोगों से मिलिए, जहां आप रहते थे। उनसे खूब गपशप कीजिए। अगर आपका शहर बदल गया है तो आप गूगल को मदद से उस मोहल्ले, पार्क या स्कूल को देख सकते हैं, जहां आपने बचपन बिताया था, या फिर फेसबुक के माध्यम से अपने बचपन के दोस्तों को ढूँढ कर उनसे बातचीत कर सकते हैं। आपके पास बचपन की तस्वीरों का एल्बम हो तो उन तस्वीरों को देखिए और एक-एक तस्वीर से जुड़ी बातें याद कीजिए। वही वाली टॉफी खरीदकर फिर से खाइए, जो आपको खूब पसंद हुआ करती थी। उस मिठाई की

दुकान पर जाकर समोसा या कचौरी खाइए, जहां के समोसे, कचौरी आप बचपन में बड़े चाव से खाते थे। आप कुछ देर के लिए ही सही अपने बचपन में पहुंच जायेंगे। यकीन मानिए, किसी की लिखी ये पंक्तियां आपको बरबस याद आ जाएंगी कि *‘नंगे पांव दौड़ते थे उस बचपन में, बढ़ते तबुजें नै पैरों में चुपन का एहसास करा दिया।’*



डॉस करना या जो अच्छा लगता हो करे। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, *‘हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।’* *

खूब लें राइडिंग का मजा

अपने बचपन को लौटाने के लिए, उन पलों को फिर से जीने के लिए आज के जमाने में बेस्ट प्लेस हैं एम्यूजमेंट पार्क। एम्यूजमेंट पार्क में छोटे बच्चों को खेलते देखकर आपको अपना बचपन याद आ जाएगा। फिर तरह-तरह के राइड्स का आनंद लेना, वहां घूमना-फिरना और मस्ती करना आपके अंतर्मन को पूरी तरह खुश कर देगा। जब मौका मिले, आप ऐसी जगहों पर जरूर जाएं और राइड्स के साथ-साथ वहां मिलने वाले डिफरेंट फूड्स एंजॉय करना ना भूलें।

बचकाली हरकतों से ना झिझकें

किसी ने क्या खूब लिखा है, *‘झूट बोलते थे फिर भी कितने सच्चे थे हम। यह उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम।’* आपने देखा होगा कि बच्चों को जो पसंद आता है, वे उसे पूरी मस्ती के साथ करते हैं। चाहे खेलना-कूदना हो, गाना हो या नाचना हो। उन्हें इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं रहती कि कोई क्या सोचगा या क्या कहेगा? उनका पूरा ध्यान सिर्फ अपनी खुशी और मस्ती में होता है। आपको भी बिल्कुल वही बेपरवाही अपनानी होगी। अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ठहाके मारकर हंसना, चुटकुले सुनाना, डांस करना या जो अच्छा लगता हो करे। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, *‘हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।’* *

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

कुछ लोगों की आदत होती है कि वे हर छोटी-बड़ी बात पर जरूरत से ज्यादा सोच-विचार यानी ओवर थिंकिंग करते हैं। इससे वे कोई भी निर्णय जल्द नहीं ले पाते हैं। अगर आप भी ऐसी समस्या से ग्रस्त हैं तो यहां बताए जा रहे उपायों को आजमा सकते हैं।



क्या आप भी करते रहते हैं हर बात पर ओवर थिंकिंग

यह सही है कि कोई भी काम अच्छी तरह सोच-विचार कर करना चाहिए। विचारशीलता और मनन करना अच्छी बात है। लेकिन जब आपका चिंतन, मनन या विचार मंथन जरूरत से ज्यादा समय तक या ज्यादा मात्रा में होने लगता है तो यह अनायास ही चिंता और ओवर थिंकिंग की आदत में तब्दील हो जाता है, जो लाइफस्टाइल को प्रभावित कर सकता है। इसलिए इस हैबिट से उबरने के लिए यहां बताई जा रही बातों पर अमल करें।

दूसरों पर ध्यान न लगाएं: हमारा मन अक्सर बाहरी कारकों पर ध्यान केंद्रित करने पर उलझा रहता है। जब हम ईर्ष्या, दूसरों द्वारा हमारी आलोचना, दूसरों की सुरुच-समृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो हमारा मन अस्थिर और अशांत हो जाता है। इसलिए बेहतर होगा कि हमारी सोच और चिंतन का दायरा उन्हीं चीजों तक सीमित हो, जिन्हें हम सुधार, बदल या निर्वाचित कर सकते हैं। पुस्तक ‘हेवर्नॉट गॉट टाइम फॉर द पेन’ में लिखा गया है कि आपको अपने उलझे हुए विचारों को बदलना और उनका समाधान करना सीखना चाहिए। सबसे पहले जानिए कौन से विचार

दू टू पॉइंट सोचें: आप क्या सोच रहे हैं, क्यों सोच रहे हैं और किन मूल बिंदुओं पर आपका चिंतन है, यह पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए। इसके लिए बिंदुओं को लिख लीजिए। विभिन्न पहलुओं पर गौर कीजिए और फिर सोचिए। ऐसी सोच आपको निर्णय लेने में मददगार होगी और समय भी नष्ट नहीं होगा।

अनुभवी लोगों से मिलें: विचार मंथन की प्रक्रिया अगर लंबी खिंच रही हो और आप किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रहे हों तो अनुभवी व्यक्तियों से सलाह लें। कुछ परिस्थितियों में सबसे अच्छा यह होता है कि आप अपनी गट फीलिंग का उपयोग करें। आपका अंतर्मन यानी सिक्थ सेंस जो कहे उसे ही सही मानें। कई शोध हो चुके हैं, जिनसे पता चलता है कि गट फीलिंग और लॉजिकल सोच का संयोजन सही निर्णय लेने में मददगार होता है।

मन को थकाने से बचें: आपको हर दिन छोटे-बड़े सैकड़ों निर्णय लेने होते हैं, जो आपके मन को थका सकते हैं। ऐसे में बहुत जरूरी है कि अपने दिमाग को शक्ति को बचाने के लिए एक दिनचर्या बनाएं, जिसमें उलझे हुए विषयों पर विचार के लिए एक वक्त तय कर दें। इसी समय जरूरी बातों पर निर्णय लें। बेवजह विचारों के सागर में डूबे रहना समय और ऊर्जा की बर्बादी है। इसकी बजाय सकारात्मक सोच के बीज बोएं और जरूरी चीजों पर विचार करें। पुस्तक ‘डेवलपिंग इन टू, हेलदी थिंकिंग’ में कहा गया है कि सकारात्मक वाक्य हमें एक खुशहाल और भयमुक्त जीवन बनाने में प्रभावी शक्ति रूप से मदद करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सुविधाएं चुनें या अपने प्रेरक वाक्यांश बनाएं और उन पर अमल करें।

आपको पीड़ा देते हैं? उन विचारों को छोड़ने की कोशिश करें। ज्यादा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और जीवन जीने और सोचने की प्रक्रिया को सरल रखें। **धैर्य बनाए रखें:** यह एक मूलभूत सिद्धांत है कि आप जो अभी बोएंगे उसकी फसल आप बाद में काट पाएंगे। लेकिन हमारा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और वह तुरंत परिणाम न मिलने पर विचलित हो जाता है। अपनी मेहनत के परिणाम के लिए जरा सा धैर्य रखिए फिर भी वांछित नतीजा ना मिले तो उस पर पुनर्विचार करिए। **भाय्य को न कोर्स:** मुश्किल परिस्थितियों में मनुष्य भाय्य को दोष देता है। लेकिन उसका भाय्य अधिकांशतः उसके चरित्र, जुनून, गलतियों और कमजोरी का ही प्रतिबिम्ब होता है। उसे अपने अवसरों से संतुष्ट रहना चाहिए और उनका फायदा उठाने की युक्ति पर विचार करते हुए स्वयं को बेहतर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। **परफेक्शन की जिद छोड़ें:** कई लोग पूर्णतावाद के शिकार होते हैं। वह किसी काम को करने के बाद भी बार-बार सोचते हैं कि इसे और कैसे बेहतर किया जाए? अगर आपकी भी यह समस्या है तो इससे उबरें। एक काम के बाद अपनी अगली प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करें।

को लेकर भी उन्होंने पॉजिटिव बदलाव महसूस किए। साथ ही अंटेशन टेस्ट में इन लोगों के दिमाग ने अपने से 10 साल जवान लोगों के बराबर परफॉर्म किया। **हर फ्रंट पर पॉजिटिव बदलाव:** इस स्टडी में सामने आया कि लोगों ने फोन छोड़कर अपने से जुड़े इंटरनेट के साथ ज्यादा समय बिताया। अच्छे से नींद लेने और एक्सरसाइज करने पर भी ध्यान दिया। लोगों ने हर रात औसतन 17 मिनट अधिक नींद ली। इन नतीजों को देखते हुए रिसर्चर का कहना है कि स्मार्ट फोन से पूरी तरह दूरी नहीं बनाई जा सकती पर इसके इस्तेमाल में बैलेंस रखना बहुत आवश्यक है। यह बहुत व्यावहारिक सा पक्ष है कि हर पल मिलते नोटिफिकेशंस से दूर रहना मानसिक ठहराव देने का काम करता है। यह ठहराव एकाग्रता की सीमा तय करता है। फोकस रहने वाला इंसान कामकाजी संसार में बेहतर परफॉर्म कर पाता है। *

सजेशन

गौतिका शर्मा

सब कुछ पा लेने से ही सुकून नहीं मिलता। खुशी का मतलब दुनिया भर से जुड़े रहना ही नहीं होता। टेक्निक के घेरे में घिरी आज की जिंदगी में स्मार्ट तकनीकों से लैस गैजेट्स से दूरी बनाना भी मन को सुख दे सकता है। वर्चुअल दुनिया में अनजान लोगों तक से जुड़ने और हर पल जुड़े रहने के बजाय, स्क्रीन की मौजूदगी पर लगाव लगाना भी मन को खुशी दे सकता है। टिक-टिक की आवाज पर हमारा ध्यान भटकते नोटिफिकेशंस को बंद रखना भी मन को शांत सहज रख सकता है। कनाडा और अमेरिका में हुआ एक ताजा अध्ययन नोटिफिकेशंस की टोन पर भागते मन की लगाव थामकर असली दुनिया में सच्चे सुख को जीने की बात पुछा करता है।

टिक-टिक पर कंट्रोल के लाभ:

बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन का साथ एक आदत बन गया है। बहुत से लोगों के लिए तो स्क्रीन में झांकते रहना किसी लत से कम नहीं। वहीं इस आदत के खामियाजों को समझकर खुद को वर्चुअल व्यस्तता से बचाने के प्रयास भी खूब किए जा रहे हैं। हालांकि आज के समय में फोन एक जरूरत भी बन गया है। इससे पूरी तरह दूर रहना भी मुश्किल है। पर इसके लती बनने से तो बचा जा सकता है। अमेरिका और कनाडा की कुछ यूनिवर्सिटीज द्वारा एक महीने तक 467 आईफोन यूजर्स पर की गई एक रिसर्च इस मोर्चे पर सही और सहज राह दिखाती है। असल में इस स्टडी में शामिल होने वाले लोगों को फोन का उपयोग पूरी तरह बंद करने की बजाय इंटरनेट का इस्तेमाल न करने को कहा गया था। इन लोगों के फोन में बाकायदा एक एप डाउनलोड की गई थी, जो फोन

स्मार्ट गैजेट्स से दूर रहकर भी मिल सकती है खुशी-सुकून

हालांकि आज के दौर में स्मार्ट गैजेट्स से पूरी तरह दूर रहना तो संभव नहीं रह गया है। लेकिन अगर केवल इस पर इंटरनेट यूज को कंट्रोल कर लें तो भी खुशी और सुकून हासिल कर सकते हैं।



पर मोबाइल इंटरनेट ब्लॉक करने से जुड़ी थी। अध्ययन में सामने आया कि इंटरनेट बंद रखना लोगों का फोकस बढ़ाने और दिमाग की जवान करने में मददगार साबित हो सकता है। इतना ही नहीं कुछ दिनों तक अगर फोन में ऐसी सेंटिंग रखी जाए तो मूड में भी सुधार हो सकता है। इंसान का दिमाग तो 10 साल तक जवान हो सकता है। स्पष्ट देखने में भी आ रहा है कि पल-



पल मिलते नोटिफिकेशंस यूजर्स का ध्यान भटकाने और मेमोरी लॉस का बंद रखना लोगों का फोकस बढ़ाने और दिमाग की जवान करने में मददगार साबित हो सकता है। इतना ही नहीं कुछ दिनों तक अगर फोन में ऐसी सेंटिंग रखी जाए तो मूड में भी सुधार हो सकता है। इंसान का दिमाग तो 10 साल तक जवान हो सकता है। स्पष्ट देखने में भी आ रहा है कि पल-

सेटिंग्स का खास असर:

फोन की सेटिंग्स चेंज करना कोई बड़ा बदलाव प्रतीत नहीं होता पर इसका असर बहुत अहम है। एक महीने की इस रिसर्च में दो हफ्ते बाद ही लोगों पर मोबाइल इंटरनेट बंद रखने की साधारण सी सेटिंग्स का आसाधारण प्रभाव दिखने लगा। अध्ययन में शामिल लोगों ने माना कि वे पहले से ज्यादा खुश हैं। साथ ही अपनी जिंदगी को लेकर उनमें संतुष्टि का भाव भी बढ़ गया है। टिक-टिक या कोई और नोटिफिकेशन टोन को बंद रखने से यूजर्स को ना केवल मानसिक तौर पर स्वस्थ महसूस हुआ बल्कि यह बेहद सही से जुड़े ये बदलाव कॉर्गेटिव बिहेवियरल थैरेपी के बराबर थे। रिसर्च में शामिल लोगों ने बताया कि फोकस रहने



नवगीत

गाणिक विश्वकर्मा 'नवर्ग'

कांच के बर्तन

नहीं रोते करोमेंद कांच के बर्तन करने लगते हैं क्या के सामने बर्तन। फिजूल दूध को खोलाते रहे गय उते निकाल लेते हैं गलाई बेवने वाले रक में श्राता है केताओं के अब खरबना। सिर्फ बत्ती है तिरियाया बदले हैं मुखड़े नई नहीं है संख्या बदले हैं टुकड़े छुआ नहीं है सालों से कोई परिवर्तन काठने की लगी है छोड़ें

लंघा/ अंशुमाली रस्तोगी

सोना जब देखो तब बमचक मचाए ही रहता है। ऐसे में न खरीदने वालों के हाथ आ पाता रहा है, न चोरों के। इससे सबसे अधिक 'आर्थिक नुकसान' हमारे चोर भाइयों का होता है। बेचारे न सोना चुरा पाते हैं, न बेचा। महर्गे होने के कारण लोगों ने सोना पहनना भी कम कर दिया है। और घर में जो रखा होता है, उसे लॉकर में डलवा देते हैं। अब चोर किस मुंह से किसी के घर चोरी करने जाए। सोना ही एक ऐसा आइटम है, जिसे चुराकर वे अच्छी कमाई कर लेते हैं। अपना घर चला लेते हैं। लेकिन उस पर भी अक्सर ही ग्रहण लग जाता है। इसलिए छिनेती की घटनाएं भी अब घट गई हैं। वरना पहले तो चैन-कुंडल खींचने की वारदातें आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिल जाया करती थीं। महिलाएं भी बड़ी अजीब हैं। अरे, अपने लिए नहीं तो कम से कम चोरों की भलाई के लिए ही सोना पहन कर घर से बाहर निकला करें। ताकि उन बेचाराओं को भी दुकान चलती रहे। एक यही तो उनकी कमाई का जरिया है, उस पर भी महर्गाई की मार। चोर अन्याय है चोर विरादरी के साथ। मैं इसकी सख्त शब्दों में मजमूत करता हूं। सरकार को इस बारे में जरूर कुछ सोच-विचार करना चाहिए। सोने के संग समस्या यही है कि वो कब बढ़ जाता है, कुछ पता नहीं चलता। रात भर में अपना दांव खेल देता है। लोगों ने भी सोने के प्रति ना जाने क्या मोह पाल रखा है कि रोटी पानी में डुबोकर खा लेंगे, लेकिन सोना जरूर खरीदेंगे। चाहे घर में खूद के रहने के लिए जगह न हो पर सोना जरूर रखेंगे। पहनने को चाहे टॉप के कपड़े न हों पर सोना जरूर पहनेंगे। मतलब हद है। यह नहीं होता कि थोड़ा सोना चोरों को भी दे दें ताकि उनका घर-परिवार भी चलता रहे। किसी गरीब की भलाई करने में दुआएं ही मिलती हैं।

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि नौने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए करल को अगर चोर भरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े।

सोना और चोर



चोरी करना कितना जोखिम भरा काम है, यह तो कोई चोर से ही पूछो। किसी अनजान घर में जाकर चुराई करना, मरे तो सोचकर ही पसीने छूट जाते हैं। यहां में कलम चलकर ही खुद को ऊंचा लेखक मानता हूं। अजी, कलम का क्या है कोई भी चला सकता है। परंतु चोरी हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए जिगर और इच्छाशक्ति दोनों की भरपूर जरूरत होती है। कभी-कभी तो चोर मुझे, लेखकों से कहीं अधिक सरल और सच्चे जान पड़ते हैं। लेखक चूँकि

बुद्धिजीवी होता है, इसलिए हर समय शब्दों-भाषा का जाल बुनता रहता है। चोर सिर्फ चोर होता है। अपने धंधे से मतलब रखता है। यहां-वहां अपनी टांग नहीं फंसाता फिरता। वो तो खामखाह मैं लेखक बन गया, जबकि मुझे तो चोर ही बनना चाहिए था।

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए करल को अगर चोर भरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े। उसका भी घर-परिवार चलता रहे। वो मुझे दुआएं दे। सोने का क्या है, वो तो पैसे की तरह हाथ का मेल है। आज है, कल नहीं। बल्कि मैं तो कहता हूँ। ज्यादा नहीं तो महीने में दो चोरियां तो अपने घर में करवा ही लेनी चाहिए। बड़े-बुजुर्ग भी कह गए हैं, धन बांटने से बढ़ता है। सही बोल रहा हूँ, सोने का चोरी चला जाना पुण्य का काम है। इससे घर में बरकत बनी रहती है। सोने का महंगा होना चोरों के पेट पर लात है। मुझे आम आदमी की सोने के पीछे दीवानी कभी समझ नहीं आई। जिसे देखो वो सोना जोड़ने में लगा पड़ा है। कोई शौक के लिए जोड़ रहा है तो कोई शादी के लिए जोड़ रहा है तो कोई आड़े वक्त के लिए जोड़ रहा है। अर्मा, क्या कीजिएगा इतना सोना जोड़कर। जबकि साथ कुछ नहीं ले जाना है फिर भी...। यही सोना जब चोरी चला जाता है तब रोते हैं। चोरों को बड़ुआएं देते हैं। थाने में रपट लिखवाते हैं। बेवजह पुलिस वालों को भी परेशान करते हैं। मैं तो फिलहाल इस प्रतीक में हूँ कि सोना जल्द थोड़ा और नीचे आ जाए और चोरों का कारोबार फिर से चल निकले। मुझे यह कई अच्छा नहीं लगता कि हम खाएं और चोर बेचारे हमारा मुंह ताकें। उनका दाना-पानी भी चलता रहे तो क्या हर्ज है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

सर्जना और व्याख्या

विश्व लेखक-पत्रकार अवधेश श्रीवास्तव साहित्य के गंभीर पाठक-विवेक भी हैं। लंबे समय से वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए पुस्तक समीक्षाएं कर रहे हैं। हाल में उनकी लिखी समीक्षाओं का संकलन 'सर्जना और व्याख्या' पुस्तकाकार में आया है। इसमें उनके द्वारा लिखी गई तीस पुस्तकों की समीक्षाएं संकलित हैं। अवधेश श्रीवास्तव पुस्तकों का मूल्यांकन पूरी गंभीरता से करते हैं। वे अगर किसी किताब की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हैं तो उसकी खामियों पर भी अंगुली रखने से परहेज नहीं करते हैं। यहां विष्णु प्रभाकर, भगवती चरण वर्मा, अस्मर वजाहत, अलका सरावगी, गोविंद मिश्र, शिवमूर्ति, राम दश मिश्र, ओम निश्चल आदि की पुस्तकों के अलावा अनैस्ट हेमिंग्वे के अनूदित उपन्यास 'शख विदाई' की समीक्षा भी पढ़ी जा सकती है।



पुस्तक: सर्जना और व्याख्या (समीक्षात्मक लेख)
लेखक: अवधेश श्रीवास्तव, मूल्य: 250 रुपए,
प्रकाशक: शांती प्रकाशन, गाजियाबाद

महादेव शिव की दिव्य-भव्य प्रतिमाएं

आस्था / शिखर चंद जैन

महादेव शिव को समर्पित सावन के विशेष महीने में भक्तगण भगवान शिव से जुड़े तीर्थ-स्थलों की यात्रा करते हैं। इस अवसर पर हम आपको अपने देश के विभिन्न स्थानों में स्थित भगवान शिव की कुछ दिव्य और भव्य प्रतिमाओं के बारे में बता रहे हैं। इनके दर्शन मात्र से विलक्षण शांति प्राप्त होती है।

मुरुदेश्वर महादेव कर्नाटक

कर्नाटक के उत्तरी हिस्से के भटकल तहसील में स्थित है मुरुदेश्वर महादेव मंदिर। 'मुरुदेश्वर' भगवान शिव का ही एक नाम है। यहां महादेव की जो मूर्ति स्थापित की गई है, वह देश-जुनिया की दूसरी सबसे बड़ी शिव प्रतिमा है। यह प्रतिमा 123 फीट ऊंची है। इसे बनाने में 2 साल का वक्त लगा। मुरुदेश्वर मंदिर अरब सागर के तट पर स्थित है। यह तीन ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। यह स्थल मंगलौर से 165 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां साल भर भक्तों और पर्यटकों का आगमन होता रहता है। *



आदियोगी शिव, कोयंबटूर

भगवान शिव के मुख की दुनिया में सबसे बड़ी प्रतिमा है आदियोगी शिव प्रतिमा। कोयंबटूर से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित यह शिव प्रतिमा 112 फीट ऊंची है। इसका वजन 500 टन है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है। इस प्रतिमा को बनाने में सीमेंट, कंक्रीट, बालू आदि किसी भी वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया गया है बल्कि इसे धातु के टुकड़ों से बनाया गया है। इसके निर्माण में ढाई साल लगे। इस मंदिर के निर्माण से संबद्ध संस्था ईशा फाउंडेशन के अनुसार आदियोगी शिव का यह चेहरा मुक्ति का प्रतीक है। यह शिव प्रतिमा योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है। *



सर्वेश्वर महादेव, वडोदरा

गुजरात के वडोदरा शहर के मध्य में स्थित है सूरसागर झील और इस झील के बीचों-बीच विराजमान हैं सर्वेश्वर महादेव। 78 फीट गहरे 23 खंभों पर टिकी सर्वेश्वर महादेव की यह मूर्ति 120 फीट ऊंची है। इसके निर्माण में 6 वर्ष लगे थे। यह स्थान अहमदाबाद से 112 किलोमीटर दूर है। शिव भक्तों के लिए यह मंदिर आस्था का केंद्र तो है ही, अन्य धर्मावलंबियों एवं पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। इस मंदिर के आस-पास भी बहुत कुछ दर्शनीय है। *



सिद्धेश्वर महादेव, सिक्किम

सिक्किम के सोलोफोक पहाड़ी पर सिद्धेश्वर महादेव यानी भगवान शिव की बेटी हुई मुद्रा में लगभग 87 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। आधार से इसकी ऊंचाई 108 फीट है। सिक्किम के लोग इसे नामची महादेव और भगवान किरतेश्वर के नाम से भी पूजते हैं। सफेद रंग की यह मूर्ति आस्थावान शिव भक्तों के साथ-साथ पर्यटकों को भी आकृष्ट करती है। यहां भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों के साथ-साथ चार धार्मिक-बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वर की प्रतिकृतियां भी स्थापित हैं। *



ये शिव प्रतिमाएं भी हैं भव्य

यहां वर्णित भगवान शिव की विशाल एवं दिव्य प्रतिमाओं के साथ-साथ देश में कई अन्य स्थानों पर भी शिव के विशाल स्वरूप के दर्शन होते हैं।

- ▶ जबलपुर (मध्य प्रदेश) के कंठाट शहर में 76 फीट लंबी शिव प्रतिमा मौजूद है। इसके चारों तरफ 12 ज्योतिर्लिंग भी विराजित किए गए हैं।
- ▶ बैंगलुरु में शिवोहम शिव मंदिर में मौजूद शिव प्रतिमा 65.6 फीट ऊंची है। यहां पृष्ठभूमि में हिमालय की प्रतिकृति बनाई गई है।
- ▶ गुजरात के द्वारका में मौजूद है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर। यहां विराजित शिव प्रतिमा 82 फीट ऊंची है।



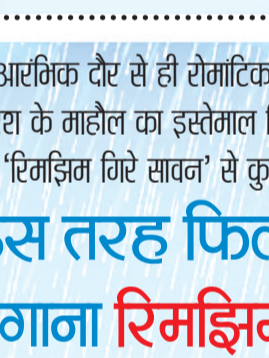
बैंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर



गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

हर की पैड़ी के शिव, हरिद्वार

हरिद्वार में हर की पैड़ी मंदिर बेहद लोकप्रिय श्रद्धा का केंद्र है। इसके ठीक सामने मौजूद है स्वामी विवेकानंद पार्क जहां भगवान शिव की 100 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। यहां देर शाम तक ठहर कर आप महादेव शिव के दर्शन के साथ-साथ गंगा आरती का भव्य नजारा भी देख सकते हैं। *



बैंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर



गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

सेल्फ इंफुवेंट / जोगिंदर रोहिल्ला

सफलता के लिए सीखनी होगी

समय प्रबंधन की कला

समय की कद करना ही सफलता की पहली सीढ़ी है। पैसा, शोहरत, संबंध, सब कुछ दोबारा पाया जा सकता है, लेकिन एक बार गया हुआ समय फिर नहीं आता। इसलिए अगर सफल होना चाहते हैं, तो समय प्रबंधन की कला सीखनी ही होगी।

भारत के प्रसिद्ध महान आचार्य चाणक्य ने कहा था, 'पैसा दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता।'

सच है, हम सभी के पास दिन में 24 घंटे होते हैं। किसी के पास न ज्यादा, न कम। इसके बावजूद कुछ लोग हर दिन नई ऊंचाइयों को छूते हैं, जबकि बहुत सारे लोग समय की कमी की शिकायत करते रहते हैं। इसका कारण सीधा और स्पष्ट है- सफल लोग समय को सिर्फ बिताते नहीं, वे अच्छे से समय को मैनेज करते हैं। हालांकि आज की तेज रफतार जिंदगी में लोग सबसे ज्यादा जिस चीज की कमी महसूस करते हैं, वह है- समय। घर-ऑफिस का वर्क प्रेशर, सोशल मीडिया, परिवार की जिम्मेदारियों में उलझकर लोग यही कहते हैं, क्या करें समय ही नहीं मिलता। पर सच यह है कि समय मिलता नहीं, समय मैनेज करना होता है। इसीलिए ब्रायन ट्रेसी ने कहा है, 'जो लोग अपने समय को नियंत्रित नहीं करते, वे अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकते।'

सबसे सफल टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर के सफल बनने के पीछे केवल उनकी प्रतिभा ही नहीं, बल्कि उनका अनुशासित समय प्रबंधन भी था। उन्होंने अपनी ट्रेनिंग, रिकवरी और निजी जीवन-नीतियों को संतुलन के साथ समयबद्ध किया, जिससे उनका प्रदर्शन लगातार ऊंचाइयों पर बना रहा।

समय प्रबंधन क्यों है जरूरी: हमें समझना होगा कि समय सीमित है। औसतन इंसान के पास सिर्फ 4000 हफ्ते होते हैं। घर-बाहर के काम कभी खत्म नहीं होते, इसलिए यह तय करना जरूरी है कि किस काम को पहले करना है और किसे बाद में? आपको समझना होगा कि संतुलित जीवन में करियर, स्वास्थ्य, रिश्ते, खुशी सभी के लिए समय चाहिए होता है। जब हर चीज की प्लानिंग होती है तो समय तनाव कम होता है, मन शांत रहता है।

समय प्रबंधन के तरीके: समय प्रबंधन करना बहुत कठिन नहीं होता है, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होता है।

प्राथमिकता तय करें: जो काम जरूरी है, वही पहले करें। अजैट और इंपॉटेंट का अंतर समझें। इसी तरह यह



भी बहुत जरूरी है कि अनावश्यक कामों को मना करना सीखें। ऐसे काम करने में अपना टाइम वेस्ट ना करें। प्लानिंग करें: काम शुरू करने के पहले से ही आपको हर महीना, हफ्ता और हर दिन प्लान होना चाहिए। अगर ये बहुत ज्यादा लगता है तो हर हफ्ते और हर दिन की प्लानिंग से शुरू कीजिए। अपने कार्यों को एक निश्चित समय और क्रम में इस तरह से प्लान कीजिए कि हर जरूरी काम समय पर, सही ध्यान और ऊर्जा के साथ पूरा किया जा सके।

यदि रीखिए कि आपको प्लानिंग में जिंदगी के हर पहलू का ध्यान रखना है। जैसे- करियर, हेल्थ, परिवार, हॉबी। इवेल्यूपेशन करें: हर वीक के अंत में अपना इवेल्यूपेशन खुद करें। स्वयं से पूछें कि इस हफ्ते मेरी उपलब्धियां कैसी रही? क्या मैं अपने समय का सदुपयोग कर पाया? क्या इसमें और सुधार की जरूरत है? इन सब प्रश्नों के उत्तर आपको हर हफ्ते अपने टाइम मैनेजमेंट को इंफुव करने में मदद करेंगे।

ना करें टाइम वेस्ट: आज के समय में सोशल मीडिया लोगों का समय वेस्ट करने वाला सबसे बड़ा जरिया बन गया है। हम अनजाने में दिन के कई घंटे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब या फेसबुक पर बिता देते हैं। जरूरी है कि हम इन चीजों के इस्तेमाल पर नियंत्रण रखें। आप खुद तय कर सकते हैं कि दिन में कितना समय इनको देना है। यह समझना जरूरी है कि हर काम के लिए 'हां' कहना जिम्मेदारी नहीं, कमजोरी बन सकता है। जब जरूरत हो, तो 'ना' कहना सीखें, ताकि आप अपने समय और ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। *



प्रेमियों की भाँति अमिताभ-मौसमी का भीगना बहुत अच्छा लगता है। समंदर किनारे बनी दीवार पर अमिताभ का हाथ पकड़े हुए मौसमी का चलना-फिरना, अमिताभ का दोनों हाथों से पकड़ कर मौसमी को नीचे उतारना, चेहरे पर जमी बारिश की बूंदों को मौसमी द्वारा अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछना, ये सारे दृश्य सुंदर, स्वाभाविक और कमाल बन पड़े हैं।

पूरे गाने में दोनों कलाकारों का उत्साह देखते ही बनता है। बालमन जिस तरह बिंदुसपन के साथ बारिश में उछलता-कूदता है, बिल्कुल वही उमंग, उत्साह, उल्लास, ऊर्जा दिखती है दोनों में। गोथिक शैली की ब्रिटिशकालीन बड़ी-बड़ी इमारतों के सामने, नाटियल के पेड़ों के पास खुले मैदान के गड्ढों में भरे पानी को पूरे जोश-जुनून के साथ पैरों से छपाक मारना, अमिताभ-मौसमी का मासूम अल्ट्राडान, ...गाने का एक-एक फ्रेम, एक-एक दृश्य बेहद खूबसूरत बन पड़ा है। *

बारिश का मौसम और पकोड़े का कनेक्शन तो आप जानते ही हैं! लेकिन यहाँ हम आपको देश के अलग-अलग हिस्सों में खाए जाने वाले कुछ जायदेदार मानसूनी व्यंजनों के बारे में बता रहे हैं, जिनका स्वाद आप कभी मुला नहीं पाएंगे।

जायकेदार मानसूनी व्यंजनों का स्वाद



अगस्त्य के फूल के पकोड़े



धुसका-बरी

झारखंड में बस जाएंगे... इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बरी। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों का आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्टी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

चाव से खाया जाता है। इसे 'शाकाहारी मटन' भी कहा जाता है। एमपी में दाल-बाफला: पश्चिमी मध्य प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा है मालवा। यहां बारिश की बूंदें दाल-बाफला का संदेश लेकर आती हैं। बाफला यानी आटे की बाटी को कंडे की आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों का आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्टी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

बिहार की कचरी-मूरही और लिट्टी-चोखा लिट्टी के लिए चने के सत्तू में बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया पत्ती, अदरक, लहसुन, नींबू का रस, अजवाइन, कलींजी, नमक और कुछ बूंदें सरसों के तेल डाल कर मिश्रण तैयार किया जाता है। कूटने वाली कटोरी में यह मिश्रण डाल कर गोड़ते जा तोयते की आग में पकाया जाता है। फिर इसी आंच पर बैंगन को गूला कर घोल में लपेट कर तैयार पकोड़े मूरही यानी पफ राइस या मुरमुरे। बारिश में गरमा-गरम कचरी के साथ मूरही का स्वाद मुलाया नहीं जा सकता है।

चोखा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद एक बार अनार जुबान पर चढ़ गया तो यकीन मानिए, इसे बार-बार खाने का जी करेगा।

बिहार की कचरी-मूरही और लिट्टी-चोखा लिट्टी के लिए चने के सत्तू में बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया पत्ती, अदरक, लहसुन, नींबू का रस, अजवाइन, कलींजी, नमक और कुछ बूंदें सरसों के तेल डाल कर मिश्रण तैयार किया जाता है। कूटने वाली कटोरी में यह मिश्रण डाल कर गोड़ते जा तोयते की आग में पकाया जाता है। फिर इसी आंच पर बैंगन को गूला कर घोल में लपेट कर तैयार पकोड़े मूरही यानी पफ राइस या मुरमुरे। बारिश में गरमा-गरम कचरी के साथ मूरही का स्वाद मुलाया नहीं जा सकता है।

चोखा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद एक बार अनार जुबान पर चढ़ गया तो यकीन मानिए, इसे बार-बार खाने का जी करेगा।

यादें

अशोक वाघवाणी

सावन और बरसात का हिंदी फिल्मों से पुराना कनेक्शन रहा है। बीते दौर की ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों से लेकर आज तक हिंदी फिल्मों में बरसात में भीगते हुए नायक-नायिका पर रोमांटिक गाने फिल्माने की परंपरा चल रही है। इस तरह के प्रयोग अकसर ही फिल्म और गाने को हिट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बारिश में फिल्माए गए कई गाने इतने लोकप्रिय हुए हैं कि आज भी बारिश के मौसम में भीगने पर आम लोगों को भी उनकी पंक्तियां याद आ ही जाती हैं। ऐसे ही यादगार गानों की कड़ी में शामिल है वर्ष 1979 में रिलीज हुई फिल्म 'मंजिल' के का वो सुपरहिट गीत 'रिमझिम गिरे सावन...', जिसे फिल्माया गया था अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर। देखा जाए तो इस

हिंदी सिनेमा के आरंभिक दौर से ही रोमांटिक दृश्यों को प्रभावी बनाने के लिए सावन और बारिश के माहौल का इस्तेमाल किया जाता रहा है। ऐसे ही एक यादगार गीत 'रिमझिम गिरे सावन' से कुछ दिलचस्प बातें जुड़ी हुई हैं।

कुछ इस तरह फिल्माया गया था पॉपुलर गाना रिमझिम गिरे सावन...

गाने की लोकप्रियता में बरसात ने उत्प्रेरक का काम किया। बासु चटर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म 'मंजिल' मृगाल सेन द्वारा निर्देशित बांग्ला फिल्म 'आकाश कुसुम' (1965) का रीमेक है। इस फिल्म की कहानों को दर्शकों, समीक्षकों की समान रूप से सरहना मिली थी। बैकग्राउंड में बजता है गाना: फिल्म 'मंजिल' के इस लोकप्रिय-कर्णप्रिय गीत 'रिमझिम गिरे

सावन, सुलग-सुलग जाए मन...' को लिखा था योगेश ने और इसका सुरीला संगीत दिया था आर.डी. बर्मन ने। दिलचस्प बात यह है कि इस गाने को लता मंगेशकर और किशोर कुमार ने आवाज दी है, तो भी यह युगल गीत नहीं है। ये गाना अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर बारिश में भीगते हुए फिल्माया गया है। लेकिन पढ़ें पर इन दोनों कलाकारों को यह गाना गाते हुए नहीं



दिखाया गया है। पूरे सीक्वेंस के दौरान केवल बैकग्राउंड में बजता रहता है- रिमझिम गिरे सावन...। असली बारिश में फिल्माया गया: इस लोकप्रिय गीत के साथ एक दिलचस्प बात यह भी जुड़ी है कि इसको मुंबई की असली बारिश में अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव,

गिरगांव चौपाटी, फोर्ट, गेट वे ऑफ इंडिया, ओवल मैदान, हुतात्मा चौक आदि दक्षिण मुंबई के दर्शनीय स्थानों पर इसे शूट किया गया। अमिताभ और मौसमी ने भी इस गाने में स्वाभाविकता लाने की कोशिश की, जिसमें दोनों सफल भी हुए। सूट, टाई पहने अमिताभ और सीधी-सादी साड़ी पहने मौसमी बिना छाते के बारिश में भीगते, अठखेलियां करते हुए टहलते दिखते हैं। बारिश से बचने के लिए इनके पास कोई छाता या रैन कोट नहीं होता है। वहीं हाथों में छाता थामे हुए लोगों का हजुम, इन्हें भीगते हुए देखता है। इससे अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव,

गिरगांव चौपाटी, फोर्ट, गेट वे ऑफ इंडिया, ओवल मैदान, हुतात्मा चौक आदि दक्षिण मुंबई के दर्शनीय स्थानों पर इसे शूट किया गया। अमिताभ और मौसमी ने भी इस गाने में स्वाभाविकता लाने की कोशिश की, जिसमें दोनों सफल भी हुए। सूट, टाई पहने अमिताभ और सीधी-सादी साड़ी पहने मौसमी बिना छाते के बारिश में भीगते, अठखेलियां करते हुए टहलते दिखते हैं। बारिश से बचने के लिए इनके पास कोई छाता या रैन कोट नहीं होता है। वहीं हाथों में छाता थामे हुए लोगों का हजुम, इन्हें भीगते हुए देखता है। इससे अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव,

आकाशवाणी सार्वजनिक क्षेत्र की रेडियो प्रसारण सेवा है, जो लगभग एक सदी से ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का साधन बना हुआ है। आगामी 23 जुलाई को आकाशवाणी के स्थापना दिवस पर इसकी अब तक की यात्रा पर एक नजर।

अतीत से अब तक बरकरार आकाशवाणी की महत्ता

जानकारी

पूनाम पांडे

आज आभासी दुनिया और तकनीक से सब कुछ जान लेने वाली पीढ़ी को अगर साढ़े चार दशक पहले के भारत की यह खास बात बताई जाए कि आकाशवाणी जीवन का एक अटूट हिस्सा हुआ करता था तो शायद वो एकदम से यकीन न करे। पर यही तब के समय का सच था।

आकाशवाणी की शुरुआत

आकाशवाणी की स्थापना 23 जुलाई 1927 को की गई थी। उस समय इस सेवा का नाम भारतीय प्रसारण सेवा (इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन) रखा गया था। तब देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटरों से की गई थी। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ। 1936 में इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो रखा गया और 1957 में इसे आकाशवाणी नाम दिया गया।

जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

उस दौर में भारत में साक्षरता दर बहुत कम थी। वे दुनिया की दौड़ में बहुत पीछे थे। आकाशवाणी के माध्यम से बड़े ही सरल ढंग से आम बोल-चाल की भाषा में विभिन्न प्रकार की जानकारीयां आम लोगों तक उपलब्ध कराई जाती थीं। दूर-दराज के



आकाशवाणी

ग्रामीण इलाके में लोगों से जुड़कर और उनको जागरूक करने में रेडियो पर प्रसारित होने वाले आकाशवाणी के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भारत के राष्ट्रीय प्रसारक के रूप में, ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) यानी आकाशवाणी आज भी जनता को मनोरंजन, सूचना एवं ज्ञानपरक सेवाएं दे रहा है। आकाशवाणी शुरुआत से ही अपनी आदर्श वाक्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का अनुसरण कर रहा है।

आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क

अपनी स्थापना के बाद से धीरे-धीरे आकाशवाणी के नेटवर्क का विस्तार होता गया। आज आकाशवाणी का तेइस भाषाओं और एक सौ छियालीस बोलियों में प्रसारण होता है। आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क देश की लगभग पूरी आबादी एवं क्षेत्र को कवर करता है।

हर तरह का मनोरंजन

आकाशवाणी समस्त भाषायां प्रदेशों की जनता के

लिए गीत-संगीत, नाटक, गोष्ठियां, वातांश, रूपकों, संस्मरणों आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इसके अलावा आकाशवाणी की विविध भारतीय सेवा फिल्मी गीतों को समर्पित होती है। आकाशवाणी पर समस्त कार्यक्रमों का लगभग पचास प्रतिशत समय मनोरंजन परक कार्यक्रमों के लिए होता है।

सूचना, शिक्षा एवं ज्ञान भी

आकाशवाणी पर हर एक घंटे पर मुख्य समाचार प्रसारित किए जाते हैं। इसके अलावा प्रातःकाल और सायंकाल में 15 मिनट की अवधि का समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। यह समाचार बुलेटिन हिंदी और अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता है। बुलेटिन को इस तरह से तैयार किया जाता है कि श्रोता को उसे समझने के लिए किसी भी शब्दकोश का सहारा न लेना पड़े। आकाशवाणी पर श्रोताओं के विभिन्न समस्याओं को लेकर वातांश भी प्रस्तुत की जाती हैं। अनुसंधानों के परिणामों, अभिभाषणों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत कृषि, विज्ञान संबंधी शिक्षा देना भी शामिल होता है। आकाशवाणी के माध्यम से स्कूल तथा कॉलेज की कक्षाओं के लिए रेडियो द्वारा पाठ्य विषयों पर चर्चाएं भी प्रसारित की जाती हैं।

कायम है प्रासंगिकता

देखा जाए तो आज भी रेडियो और आकाशवाणी जनसंचार का सशक्त माध्यम बना हुआ है। इसने गांव-गांव तक ज्ञान की चेतना को पहुंचाने का अविस्मरणीय कार्य किया है। हालांकि आज संचार के विविध माध्यम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और हर हाथ में मोबाइल की पहुंच ने रेडियो और आकाशवाणी के अस्तित्व को चुनौती अर्थ देते हैं, लेकिन इसकी कुछ अनूठी विशेषताओं के कारण आज भी इसकी लोकप्रियता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता बनी हुई है। *

खान-पान

चेतना झा

लाजवाब राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा: राजस्थान की धरती पर बारिश की बूंदें स्वाद की नई बयार भी लेकर आती हैं। बारिश हुई नहीं कि गोट के प्रोग्राम बनने लगते हैं। गोट यानी, प्रकृति के करीब या पाकों में जाकर सामूहिक पिकनिक मनाना। अपनों के साथ खुले सुखद परिवेश में दाल-बाटी चूरम का रसास्वादन सबसे ज्यादा चलन में है। सावन के महीने में तीज और राखी जैसे पर्व पर यहां की फिजा में घेवर की खुशबू भी घुल-मिल जाती है। घेवर में स्वाद की इतनी विविधता मिलती है कि आप चखते जाएंगे पर इसका अंत नहीं होगा। मेवाड़ क्षेत्र में घूमिए तो



दाल-बाटी-चूरमा

गली-गली से उठती पकोड़े, मालपूर की सुगंध भूख बढ़ा देती है। इसके साथ ही भुट्टे की सब्जी के साथ घी चुपड़ी रोटी का स्वाद कभी नहीं भुला पाएंगे। यूपी में अंगीठी वाली मीठी रोटी: अब बात यूपी की अंगीठी वाली मीठी रोटी, अरबी के पत्ते के पकोड़े, अगस्त्य के फूल के पकोड़े की। भिगोकर पीसी गई उड़द और चने की दाल को हरी मिर्च, धनिया, अदरक डाल कर भून देते हैं, फिर धो-सुखा कर, अरबी के पत्तों पर इन्हें लपेट कर स्ट्रीम देते हैं। इसके बाद बनती है इनकी पकोड़ी। लंबी प्रक्रिया है लेकिन बरसात आते ही घर-घर में इसे बनाया और चाव से खाया जाता है। झारखंड में धुसका-बरी: 'धुसका बरी' खाएंगे,

लाजवाब राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा: राजस्थान की धरती पर बारिश की बूंदें स्वाद की नई बयार भी लेकर आती हैं। बारिश हुई नहीं कि गोट के प्रोग्राम बनने लगते हैं। गोट यानी, प्रकृति के करीब या पाकों में जाकर सामूहिक पिकनिक मनाना। अपनों के साथ खुले सुखद परिवेश में दाल-बाटी चूरम का रसास्वादन सबसे ज्यादा चलन में है। सावन के महीने में तीज और राखी जैसे पर्व पर यहां की फिजा में घेवर की खुशबू भी घुल-मिल जाती है। घेवर में स्वाद की इतनी विविधता मिलती है कि आप चखते जाएंगे पर इसका अंत नहीं होगा। मेवाड़ क्षेत्र में घूमिए तो

गली-गली से उठती पकोड़े, मालपूर की सुगंध भूख बढ़ा देती है। इसके साथ ही भुट्टे की सब्जी के साथ घी चुपड़ी रोटी का स्वाद कभी नहीं भुला पाएंगे। यूपी में अंगीठी वाली मीठी रोटी: अब बात यूपी की अंगीठी वाली मीठी रोटी, अरबी के पत्ते के पकोड़े, अगस्त्य के फूल के पकोड़े की। भिगोकर पीसी गई उड़द और चने की दाल को हरी मिर्च, धनिया, अदरक डाल कर भून देते हैं, फिर धो-सुखा कर, अरबी के पत्तों पर इन्हें लपेट कर स्ट्रीम देते हैं। इसके बाद बनती है इनकी पकोड़ी। लंबी प्रक्रिया है लेकिन बरसात आते ही घर-घर में इसे बनाया और चाव से खाया जाता है। झारखंड में धुसका-बरी: 'धुसका बरी' खाएंगे,

झारखंड में बस जाएंगे... इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बरी। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों का आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्टी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

झारखंड में बस जाएंगे... इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बरी। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों का आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्टी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

झारखंड में बस जाएंगे... इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बरी। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों का आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी